Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्यवीर दल : एक परिचय

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्यवीर दल : एक परिचय

[आर्य संस्कृति की रक्षार्थ आर्यवीर दल द्वारा साहसिक-सेवा कार्य]

—रामाज्ञा वैरागी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

प्रकाशक—
वैरागी प्रकाशन
पंजाबी कालोनी
कल्मबाग चौक, मुजफ्फरपुर,
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्ति स्थान—
श्री बालदिवाकर हंस
प्रधान संचालक
सार्वदेशिक आर्यवीर दल
महर्षि दयानन्द भवन
रामलीला मैदान; नई दिल्ली–२
अजन्ता लॉज
रक्सोल (बिहार)

प्रथम संस्करण : १९८५ ई०
सर्वाधिकर लेखक
मूल्य—१०–०० रुपये

मुद्रक—
कल्पना प्रेस,
रामकटोरा रोड, वाराणसी ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
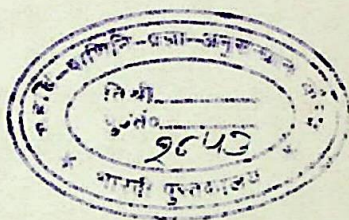
वैदिक आर्य संस्कृति

के

अग्रदूत

गुरुवर श्री विरजानन्द जी

महाराज दण्डी

के

साथ ही

महर्षि दयानन्द जी के

कर-कमलों में

सादर समर्पित

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्तु

ओ३म् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो, ब्रह्मवर्चसी जायताम् ।
आ राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायताम्
दोग्ध्री धेनुर्वोढाऽनड्वान्, आशु सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्ण
रथेष्ठा सभेयो युवाऽस्य यजमानस्य वीरो जायताम्
निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः
पच्यन्ताम्, योगक्षेमो नः कल्पताम् ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महर्षि दयानन्द ने कहा

उठो, जागो, श्रेष्ठता को प्राप्त करो

"मनुष्य बनो,

सही रूप में मनुष्य बनो,

पुरुष बनो, उठो जागो और श्रेष्ठता को प्राप्त करो।"

महर्षि दयानन्द एक स्वप्न-द्रष्टा ही नहीं, क्रांतिदर्शी का स्वरूप लिए भारत भूमि पर अवतरित हुए। 'सत्यार्थ-प्रकाश' के माध्यम से जीवन और धर्म की नयी परिभाषा देकर आर्यावर्त्त को नया आलोक दिया। महर्षि दयानन्द ने वेद और संस्कृत के अध्येता के रूप में अपने को प्रतिष्ठित ही नहीं किया वरन् भारतीय समाज के बीच फैली रूढ़िवादी प्रवृत्तियों का साहस तथा संकल्प के साथ विरोध किया और अपनी नयी मान्यतायें निरूपित की। इस प्रकार 'सत्यार्थ प्रकाश' ऋग्वेद भाष्य भूमिका, संस्कार विधि, आर्याभिविनय, आर्योद्देश्य रत्नमाला, व्यवहार भानु, गो करुणा निधि आदि ग्रंथ महर्षि ने आर्य भाषा हिन्दी और देवनागरी लिपि के माध्यम से लिखा।

महर्षि दयानन्द ने घोषित किया—'सर्व सत्य का प्रचार कर सभी को एक-मत करना, सभी को द्वेष-मुक्त बनाकर पारस्परिक प्रीतयुक्त वातावरण से सुख और लाभ पहुँचाना मेरा प्रयत्न और अभिप्राय है····।" अपने आदर्श और विचारों के प्रचार-प्रसार के लिए सन् १८७५ में आर्य समाज की स्थापना की। महर्षि का अभीष्ट था—"एक ईश्वर, एक धर्म, एक राष्ट्र, एक विचार, एक भाषा, एक विश्व।" इस अभीष्ट की प्राप्ति के लिए महर्षि दयानन्द ने रणभेरी बजायी" और भारतीय समाज में एकता तथा स्वाभिमान का नव संचार किया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महर्षि दयानन्द ने भारत के राष्ट्रीय स्वरूप का संकेत करते हुए, आज से एक सौ दस वर्ष पूर्व कहा था—'प्रेम, सहयोग और भातृत्व की भावना जब तक हम भारतीयों में विकसित नहीं होगी, तब तक हम उन्नति के शिखर पर नहीं पहुँच सकते।' महर्षि का यह जीवन सूत्र आज भी उसी रूप में जीवित ही नहीं, जाग्रत भी है। आज भी इस सूत्र की अपेक्षा, हमारे भारतीय समाज को है।

आर्य समाज की आत्मा, महर्षि दयानन्द की क्रांतिकारी कल्पनाओं के आधार पर ही 'आर्यवीर दल' के संगठन की योजना को साकार स्वरूप दिया गया। नये भारत के निर्माण में महर्षि दयानन्द का यह उद्घोष अपना सार्थक महत्व रखता है—

"मनुष्य बनो,
सही रूप में मनुष्य बनो
पुरुष बनो, उठो, जागो और श्रेष्ठता को प्राप्त करो!"

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि-सभा

महर्षि दयानन्द भवन
नई दिल्ली
दिनांक ८-७-८५

प्रिय श्री रामाज्ञा वैरागी,
सप्रेम नमस्ते।

आपकी कृति 'आर्यवीर दल : एक परिचय' देखने को मिली। आपके इश पुनीत प्रयास के लिए बधाई देता हूँ। कालान्तर में आर्यसमाज को अपने आन्दोलनों में जो सफलता और ख्याति प्राप्त हुई, उसके पीछे आर्य शक्ति का हाथ था। इसी शक्ति को आर्यवीर दल के रूप में सार्वदेशिक सभा की ओर से संगठित किया गया था और सार्वदेशिक आर्यवीर दल की स्थापना की गयी थी। आर्यवीर दल को संगठित करने और उसे आवश्यक शक्ति देने में सार्वदेशिक सभा के वर्त्तमान मंत्री श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी और उनके साथियों ने इसके लिए बहुत ही संघर्षपूर्ण कार्य किए हैं।

मुझे आशा है, आपकी इस संक्षिप्त पुस्तिका से आर्य वीरों को आर्यवीर दल के अतीत के इतिहास की सफल झांकी प्राप्त हो सकेगी। आर्यवीर दल के पुनर्जागरण में आपकी सचेष्ट और प्रबल भावनाओं के लिए भी मैं आप को बधाई और शुभकामनायें देता हूँ।

जाति, धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए आप जिस प्रकार सर्वात्मना समर्पित भाव से सेवा में जुटे हैं, परमात्मा आपको उसमें शक्ति दें।

—रामगोपाल शालवाले वानप्रस्थी
प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि-सभा, दिल्ली

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

महर्षि दयानन्द भवन

नई दिल्ली

दिनांक—५-७-८५

श्री रामाज्ञा जी वैरागी,

सञ्चालक—सार्वदेशिक आर्यवीर दल (विहार)

सप्रेम नमस्ते ।

आपकी पुस्तक 'आर्यवीर दल : एक परिचय' पढ़कर बड़ी प्रसन्नता हुई । यह पुस्तक आर्यवीरों के लिए ही नहीं, अपितु समस्त आर्य-जगत के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी । इस पुस्तिका में आर्यवीर दल के अपने जन्म-काल से अब तक का जो वृत्तांत आपने दिया है, वह आर्यवीरों को एक नई प्रेरणा तथा शक्ति प्रदान करेगा ।

मैं इस संक्षिप्त पुस्तिका के व्यापक प्रसार और प्रचार की कामना करते हुए, आप द्वारा पुस्तक लेखन में किए गए प्रयास के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ ।

भवदीय,

ओम्प्रकाश त्यागी

महामंत्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

एवम् भूतपूर्व प्रधान सञ्चालक

सार्वदेशिक आर्यवीर दल, दिल्ली

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभीष्ट लक्ष्य की ओर

हमारे अपने रामाज्ञा ठाकुर वास्तव में रणबाँकुरे व्यक्तित्वों में गिनेजाने वाले पुरोधाओं में रहे हैं। नेपाल में आर्य वीर दल के विकास में इनकी प्रमुख भूमिका रही है। राजराजेश्वर श्री ५ महेन्द्र वीर विक्रमशाहदेव उनके बड़े प्रशंसकों में एक रहे हैं।

आपने उनके जन्म दिवस आदि उत्सवों में अनेक बार आर्यवीरों सहित बढ़ चढ़कर भाग लिया। संक्षेप में मैं यह भी कहूँगा कि वह सार्वदेशिक आर्य वीर दल से अच्छे स्तर पर जुड़े रहे हैं। उन्होंने अनेक बार विदेश यात्रायें की हैं उस पर पुस्तक भी लिखी और अब आर्य वीर दल के संक्षिप्त इतिहास की झलक देना उन्होंने आवश्यक समझा है। यह वास्तव में प्रशंसनीय है।

उनके द्वारा लिखित सभी घटनायें प्रामाणिक और सत्य पर आधारित हैं। इससे जन-सामान्य और वीरों को दल के अभीष्ट लक्ष्य को समझने में सहायता मिलेगी, ऐसा मैं मानता हूँ।

मेरा विश्वास है कि यह लघु पुस्तिका सभी क्षेत्रों में पढ़ी और सराही जायेगी। मैं लेखक का हृदय से धन्यवादी हूँ कि उनका इस ओर ध्यान गया। ईश्वर उन्हें चिरायु करें।

—बाल दिवाकर हंस

सार्वदेशिक आर्य वीर दल, नई दिल्ली, प्रधान संचालक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा

मुनीश्वरानन्द भवन नया टोला, पटना दिनांक—४-९-८५

श्रीयुत् रामाज्ञा वैरागी जी

संचालक आर्यवीरदल, बिहार

श्रीमन्नमस्ते

यह जानकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई कि आपकी पुस्तक 'आर्य वीर दल, एक परिचय' छप रही है, साथ ही साथ इस स्तुत्य कार्य के लिए हमारी सभा का हार्दिक धन्यवाद।

इस समय समस्त विश्व में मुख्यतः सारे भारत वर्ष में विनाश का भयंकर तूफान चल रहा है। सारा विश्व तथा भारत इससे बचा हुआ नहीं है। ऐसे समय में आर्य समाज और आर्य वीर दल की महत्वपूर्ण भूमिका की आशा की जा रही है। देश में देश के अनैतिक तत्व से टक्कर लेना है। बिना बल के यह हो भी नहीं सकता। उपनिषदों की यह उद्घोषणा भी है कि 'नायमात्मा बलहीनेन लभ्य।' भारत की एक कुटिया में रहने वाले लंगोटी धारी आत्मबली के सामने सभी को आकर झुकना पड़ा था।

अतः मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि यह पुस्तक आर्य जगत में क्रांति लावे तथा हजारों हजार आर्य वीर पढ़कर चरित्रनिष्ठ अनुशासित दीक्षित बनकर शुद्ध एवं उन्नत बन सकें।

—वासुदेव शर्मा

प्रधान, बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा पटना तथा उप प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रति सभा, दिल्ली,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्यवीर दल : एक परिचय

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य वीर दल के यशस्वी चिन्तक श्री रामगोपाल शालवाले वानप्रस्त
प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि-सभा, नई दिल्ली–२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
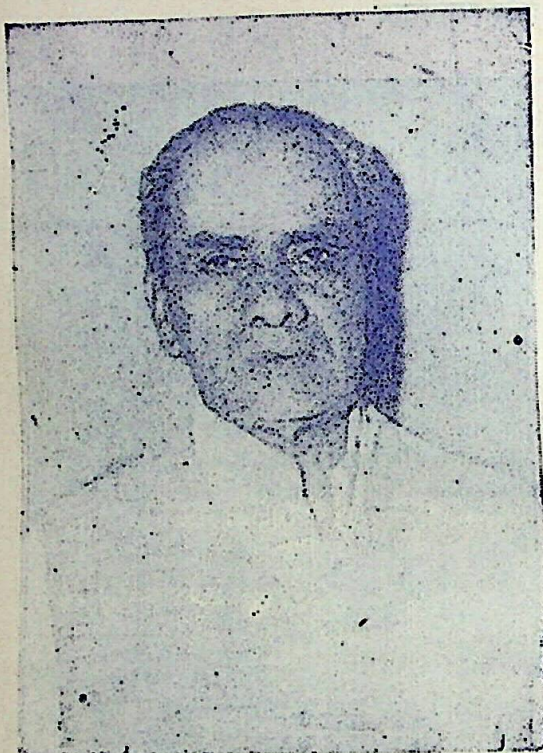
श्री ओम्प्रकाश त्यागी

संस्थापक आर्य वीर दल
महामंत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि-सभा,
दिल्ली एवम् भूतपूर्व सेनापति 'आर्य वीर दल

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
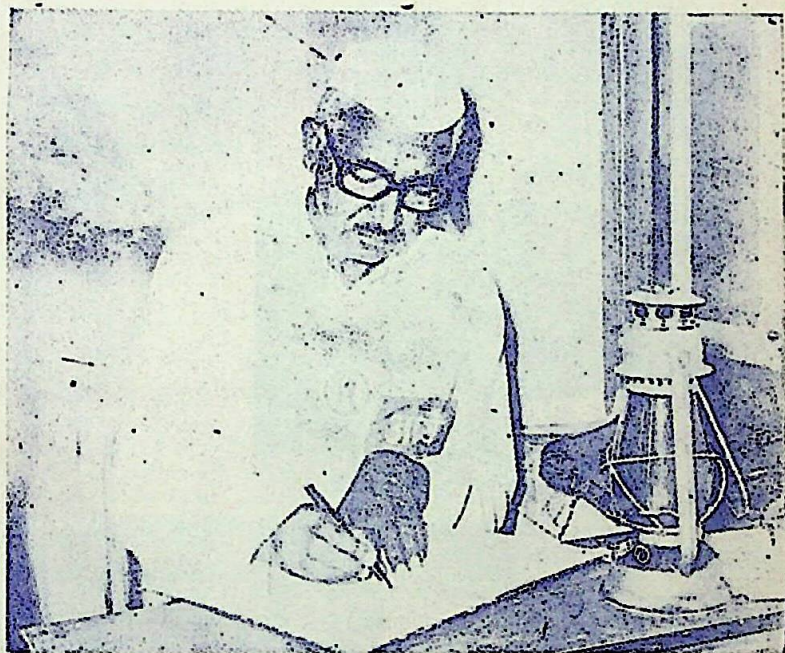
श्री बाल दिवाकर हंस प्रधान संचालक, दिल्ली
बाढ़ पीड़ित कैम्प-सेवा कार्य में व्यस्त रहने के बाद रात में लालटेन की रोशनी में काम करते हुए

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डा० देवव्रत आचार्य
उपप्रधान संचालक सार्वदेशिक आर्यवीर दल, दिल्ली

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री भूपनारायण शास्त्री, प्रान्तीय
अधिष्ठाता आर्यवीर दल, बिहार
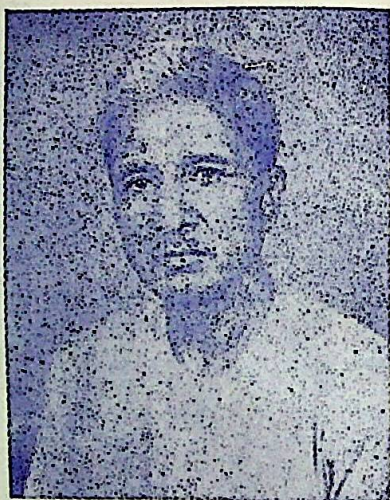
श्री बालकृष्ण आर्य सञ्चालक सार्व-
देशिक आर्यवीर दल उत्तर प्रदेश
(आर्य निकेतन, स्टेशन रोड, बिन्दकी)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री वी० के० शास्त्री—मंत्री
आर्य समाज रक्सौल तथा मंत्री
चम्पारण जिला सभा
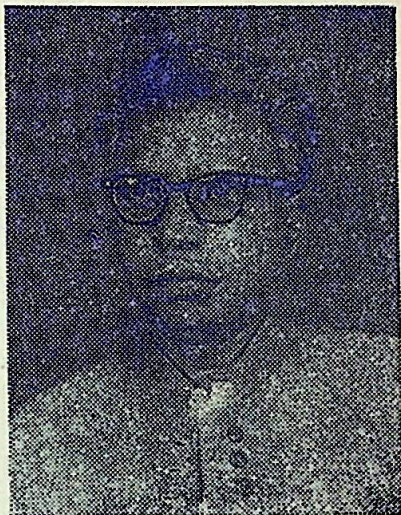
श्री आनन्द प्रकाश शर्मा उप मन्त्री
आर्य समाज, रक्सौल

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री सत्यवीर आर्य सञ्चालक सार्वदेशिक
आर्यवीर दल, राजस्थान
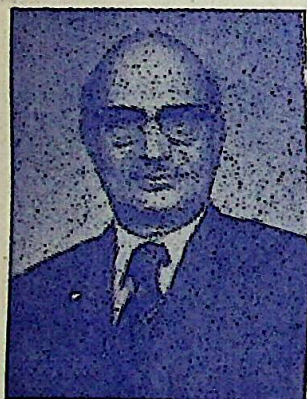
श्री प्रियतम दास रसवन्त अधिष्ठाता
आर्यवीर दल, दिल्ली प्रदेश

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
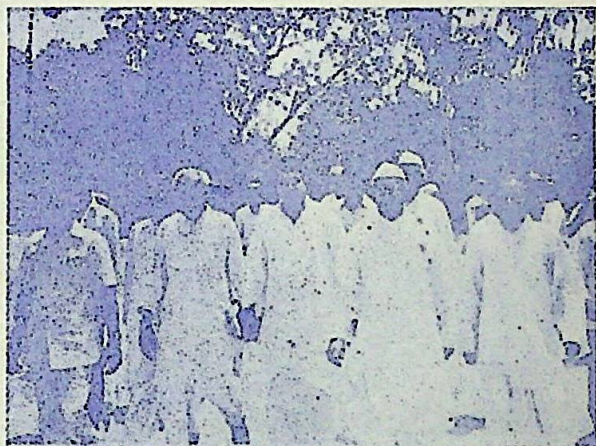
गुरुकुल झज्झर के शिविर का निरीक्षण करते हुए

साथ में—

१. रामाज्ञा वैरागी संचालक, बिहार राज्य

२. श्री प्रो० शेर सिंह जी भू० पू०, मन्त्री भारत सरकार

३. उनके पीछे श्री. बालदिवाकर हंस, प्रधान संचालक सा० आ० वी दल, दिल्ली

४. वर्तमान शिक्षा मन्त्री हरियाणा तथा अन्य कार्यकर्त्ता

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्यवीरों द्वारा प्रदर्शन कराते हुए श्री डा० देवव्रत आचार्य—उप प्रधान सञ्चालक दिल्ली

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
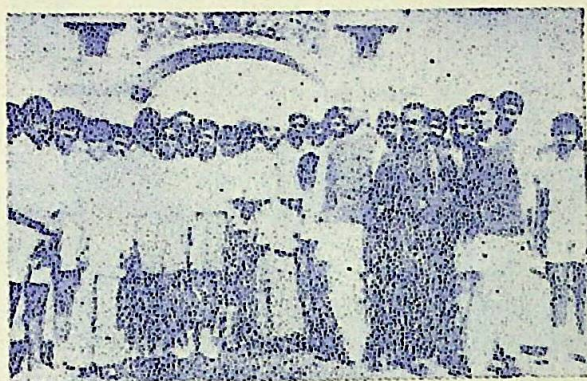
आर्यवीर दल शिविर रक्सौल (बिहार) के अवसर पर गीता भवन वीरगंज के प्रवेश द्वार पर आर्यवीरों के साथ श्री बाल दिवाकर हंस प्रधान सञ्चालक सार्वदेशिक आर्य वीरदल डा० देवव्रत आचार्य उप प्रधान सञ्चालक, दिल्ली, तथा श्री रामाज्ञा वैरागी सञ्चालक बिहार
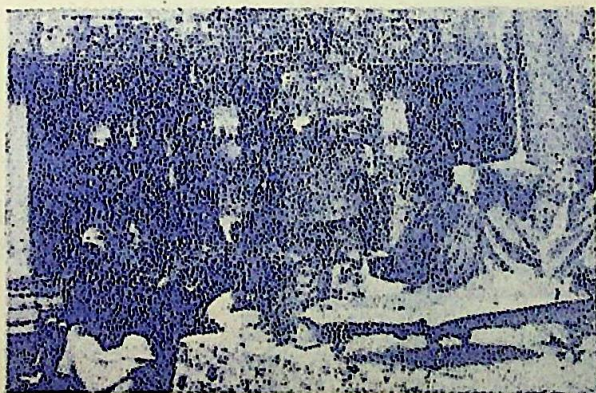
आर्यवीर दल शिविर रक्सौल (बिहार) के समापन सभा को सम्बोधन करते हुए रामाज्ञा वैरागी, सञ्चालक बिहार

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
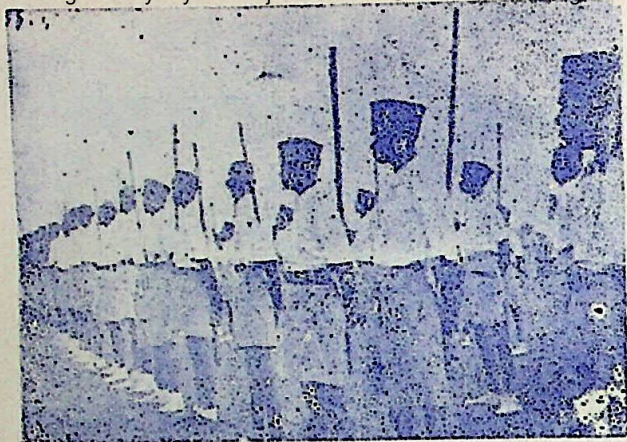
नेपाल आर्य वीर दल के सैनक महाराजाधिराज की प्रतीक्षा करते हुए
(सेमरा हवाई अड्डा पर १९५२)
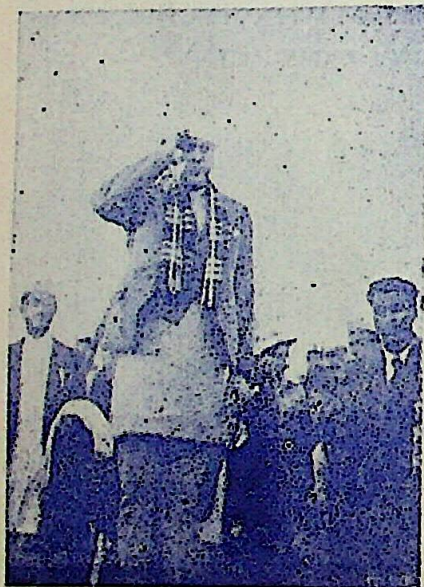
श्री ५ महाराजाधिराज त्रिभुवन वीर विक्रम शाहदेव आर्य वीर दल सैनिकों का गार्ड आँफ आँनर स्वीकार करते हुए सेमरा हवाई अड्डा पर–१९५२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेपाल के श्री ५ महाराजाधिराज त्रिभुवन वीरविक्रम शाहदेव के साथ रामाज्ञा ठाकुर सञ्चालक नेपाल आर्यवीर दल बॉडी गार्ड के रूप में (१९५२) सेमरा हवाई अड्डा पर महाराजा के साथ

आर्यवीर दल के भू० पू० बौद्धिकाध्यक्ष नेपाल के सञ्चालक ब्रह्मचारी उषर्बुध, रामाज्ञा ठाकुर के साथ १९५२ नेपाल प्रचार में
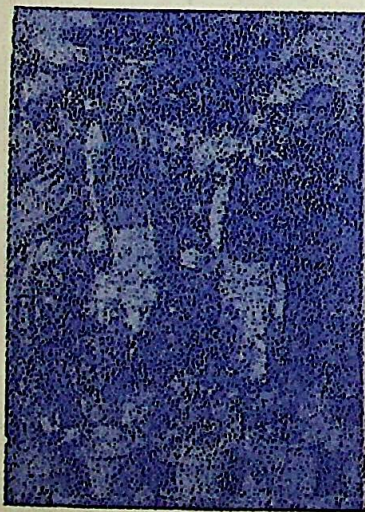
CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्यवीर दल शिविर गुवाहाटी, असम के आर्य वीरों के बीच श्री बालदिवाकर हंस प्रधान संचालक, सार्वदेशिक आर्य वीर दल, दिल्ली

विहार शिविर क्रम में (१) रामाज्ञा बैरागी संचालक विहार (२) फूलना लाल आर्य उप संचालक विहार (३) श्री बाल दिवाकर हंस प्रधान संचालक दिल्ली श्री डा० देवव्रत आचार्य उप प्रधान संचालक, दिल्ली

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
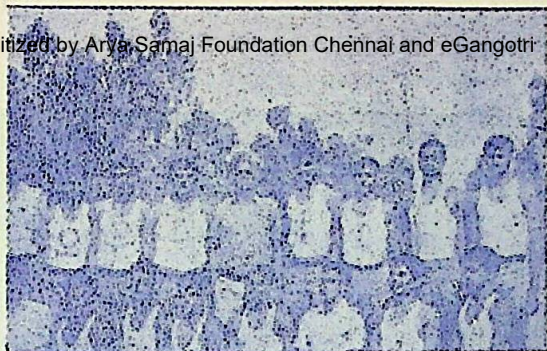
गुरुकुल झज्झर के शिविर काल में शिक्षकों की टोली

१. श्री श्रुतिधर आर्य नगर संचालक अलवर, राजस्थान
२. „ अजय कुमार जी गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर, यू० पी०
३. „ अमर सिंह जी शिक्षक, पलड़ी जि० मेरठ—यू० पी०
४. „ सत्यवीर आर्य संचालक राजस्थान—
५. „ डा० देवव्रत आचार्य उपप्रधान संचालक दिल्ली
६. „ ऋषिपाल आर्य शिक्षक, पलड़ी मेरठ यू० पी०
७. „ राजपाल आर्य „ „ „
८. „ अनिल कुमार आर्य शिक्षक देवबन्द सहारनपुर
९. „ रामतीर्थ शास्त्री शिक्षक, गुराथड़ा हरियाणा

बैठे हुए—

१. श्री सुरेश कुमार शिक्षक गुरुकुल झज्झर हरियाणा
२. „ प्रवीण कुमार „ गुरुकुल ततारपुर यू० पी०
३. „ अनिल कुमार आर्य 'राज' शिक्षक
४. „ सतीश कुमार „ गुरुकुल ज्वालापुर „
५. „ विजयेन्द्र „ गुरुकुल झज्झर हरियाणा
६. „ नरेन्द्र आर्य „ आर्य नगर अलवर, हरियाणा
७. „ मनीश कुमार „ ग्राम पलड़ी मेरठ यू० पी०
८. „ सुनील कुमार आर्य „ गुरुकुल ततारपुर „

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
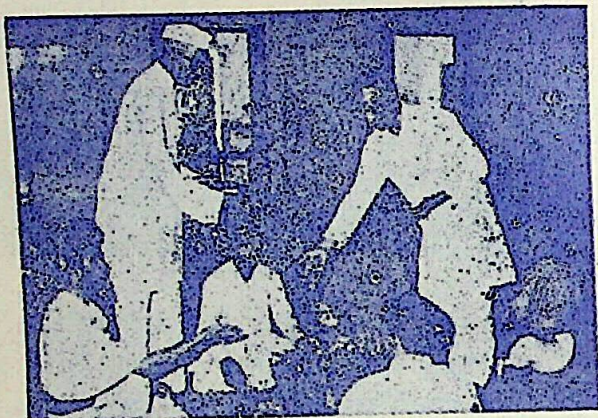
आर्यवीर दल उत्तर प्रदेश शिविर समापन पर निष्ठायज्ञ आहुतियाँ देते हुए एक तरफ श्री जयनारायण आर्य तथा दूसरी ओर से श्री बाल दिवाकर हंस प्रधान सञ्चालक तथा बैठे हुए अन्य आर्य वीर

आर्यवीर दल गुवाहाटी असम के दीक्षान्तसमापन के समय आर्यवीरों से प्रतिज्ञा कराते हुए श्री बाल दिवाकर हंस, प्रधान सञ्चालक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्यवीर दल शिविर गुरुकुल झज्झर की रैली के अवसर पर जीप के समीप श्री रामाज्ञा वैरागी संचालक विहार तथा बीच में डा० देवव्रत आचार्य उपप्रधान संचालक सार्वदेशिक आर्यवीर दल दिल्ली तथा पंक्तिबद्ध आर्यवीरों की टोली
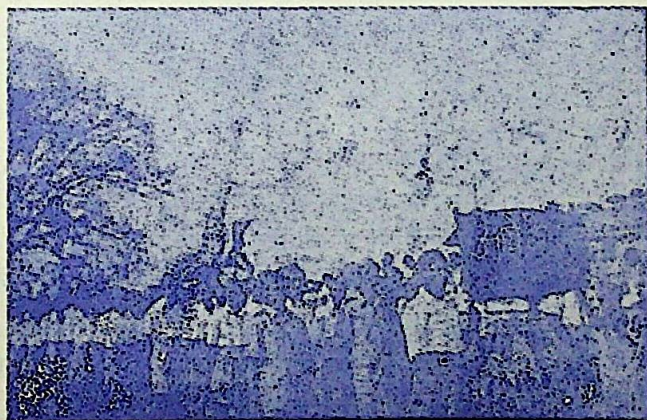
श्री ५ महाराजा धिराजा महेन्द्र वीर विक्रम शाहदेव के राज्याभिषेक (१९५५) के अवसर पर शोभा यात्रा में सम्मिलित आर्यवीरों का तीसरा स्थान टुड़ी खेल मैदान के निकट

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य वीर दल शिविर गुरुकुल झज्झर के यज्ञशाला में दीक्षा समारोह के समय बैठे मंच पर

बांयें से दायें—श्री बालदिवाकर हंस, प्रधान संचालक तथा उनके पीछे बैठे डा० देवव्रत आचार्य उपप्रधान संचालक (बीच में हरियाणा के अधिकारी गण)

रामाज्ञा वैरागी संचालक बिहार तथा अन्त में बैठे ओमानन्द जी महाराज

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
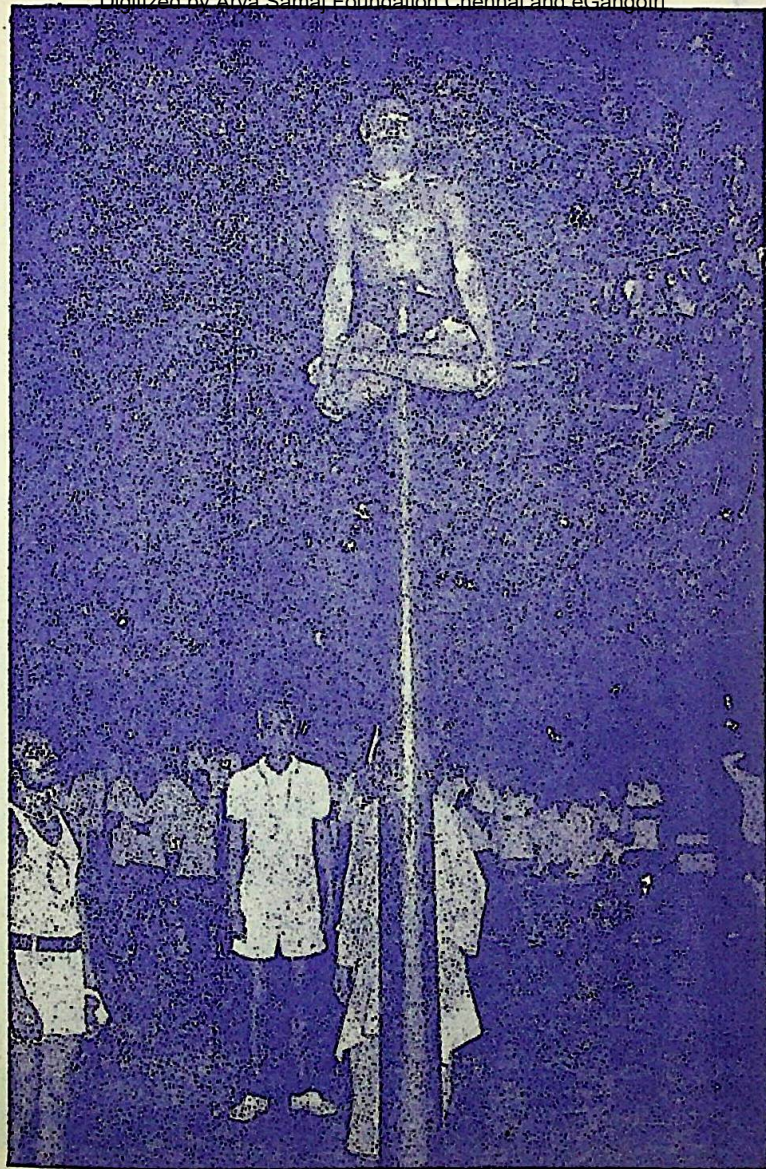
आर्यवीर दल, पलड़ी (मेरठ) के शिविर प्रदर्शन काल में मल्ल खम्भ के ऊपर समाधिष्ठ आर्य वीर तथा नीचे खम्भ के पीछे खड़े प्रधान सञ्चालक—श्री बालदिवाकर हंस

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल सोमगढ़ (गुजरात) के शिविरार्थियों के बीच बैठे हुए–डा० देवव्रत आचार्य, उपप्रधान सञ्चालक तथा श्री रतन भाई आर्य सञ्चालक, गुजरात एवं श्री भोगी लालजी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
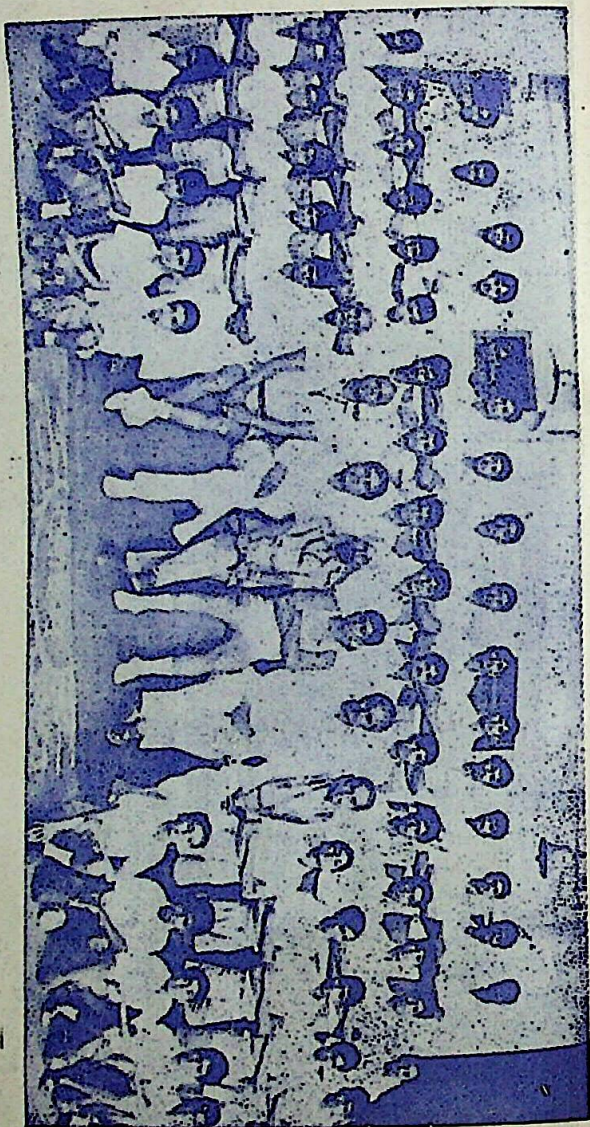
आर्यवीर दल के स्मृति-शेष

व्यक्तित्व

जिन्होंने आजीवन आर्यवीर दल की सेवायें कीं।

१. आचार्य पं० रामनारायण शास्त्री,
भूतपूर्व संचालक, बिहार,

२. श्री एम० के अमीन,
भूतपूर्व संचालक, बम्बई

३. " राम लखन आर्य, दानापुर

४. " हेतराम आर्य
भूतपूर्व मंत्री, आर्य प्रतिनिधि-सभा, राजस्थान

५. " हरिहर जी, रक्सौल

६. " राम चन्द्र जी, "

७. " हरि प्रसाद काठमान्डू, नेपाल

८. " लाल वीर आर्य पू० शिक्षक बेतिया

९. " गोरख प्र० आर्य " "

१०. " डा० स्वामी काव्या नन्द जी सरस्वती

११. " राजा लाल आर्य वीर गंज (नेपाल)

आर्यवीर दल के सक्रिय साहसी सहयोगी : तब और अब

१. श्री उत्तम चन्द 'शरर'
प्रांतीय संचालक-हरियाणा

२. " गुलजारी लाल आर्य
बम्बई

३. " भगवती प्रसाद गुप्त,
सागर, बिहार लाज, बम्बई

४. " चन्द्र पाल आर्यवीर
(एडवोकेट) बम्बई

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५. ,, स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती
अध्यक्ष, आर्यवीर दल, हिमाचल प्रदेश

६; ,, ब्रह्मचारी महावीर शास्त्री, व्यायामाचार्य,
शिक्षक आर्यवीर दल, हिमाचल प्रदेश

७. ,, आचार्य धर्म पालजी, शिक्षक
गुरुकुल तातारपुर (उ० प्र०)

८. ,, सन्नोलाल जी आर्यवीर
मुरादाबाद (उ० प्र०)

९. ,, अजीत कुमार एम. ए.
मंत्री आर्यवीर दल, हरियाणा ।

१०, ,, गौरी शंकर कौशल,
भूतपूर्व विधायक तथा भूतपूर्व उप प्रधान संचालक
मध्य प्रदेश ।

११. ,, राजगुरु शास्त्री आर्यवीर
अध्यक्ष, आर्य प्रतिनिधि सभा, (म० प्र०)

१२. ,, केवल राम भ्राता, भूतपूर्व अधिष्ठाता,
सुन्दर नगर, हिमाचल प्रदेश

१३. ,, यशपाल आर्य अधिष्ठाता, आर्यवीर
दल, मंत्री आर्य प्रतिनिधि, सभा म० प्र०

१४. ,, लक्ष्मीनारायण भार्गव, क्षेत्रीय अधिष्ठाता
आर्यवीर दल, खण्डवा (म० प्र०)

१५. ,, वेंकटेश्वर सूबेदार, आन्ध्र प्रदेश

१६. ,, हरिश्चन्द्र गुरुजी महाराष्ट्र,

१७. ,, मुरारीलाल आर्य, हिमाचल प्रदेश

१८. ,, अवध बिहारी खन्ना, वाराणसी

१९. ,, बेचन सिंह जी, वाराणसी

२०. ,, जयनारायण जी आर्य, अलीगढ़
संचालक आर्यवीर दल, आगरा क्षेत्र

२१. ,, बाबूलाल आनन्द
विदिशा, मध्यप्रदेश

२२. ,, शिवमित्र शास्त्री
भूतपूर्व संचालक, आर्यवीर दल, बिहार

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२३. „ भगवती शरण,
भूतपूर्व बौद्धिकाध्यक्ष, आर्यवीर दल विहार

२४. „ हरि प्रसाद शास्त्री भू. पू. संचालक विहार

२४. „ प्रभाशंकर आर्य, भू. पू. संचालक
आरा. विहार

२६. „ पन्नालाल गुप्त आर्य
आरा, विहार

२७. „ राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता, दानापुर,

२८. „ रामबली आर्य „

२९. „ रामचन्द्र जी आर्य, शिक्षक, बेतिया,

३०. „ वकील प्रसाद आर्य बेतिया

३१. „ कन्हैया लाल आर्य, बेतिया

३२. „ ज्वाला प्रसाद आर्य, बेतिया,

३३. „ दीनानाथ आर्य, नरकटियागज

३४. „ विद्या भास्कर जी आर्य, नरकटियागंज

३५. „ महाराज प्रसाद आर्य नरकटियागंज

३६. „ तपस्वी राम आर्य „

३७. „ पं० सत्यदेव शास्त्री, वाराणसी

३८. „ छोटू सिंह, एडवोकेट, अलवर
प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान

३९. „ ओम्प्रकाश भँवर भू० पू० अधिष्ठाता
आर्यवीर दल राजस्थान

४०. „ मदन सिंह आर्य, भू० पू० अधिष्ठाता,
आर्यवीर दल, राजस्थान

४१. „ रतन लाल, एडवोकेट, अधिष्ठाता
आर्यवीर दल, राजस्थान

४२. „ फूलसिंह शास्त्री, उप संचालक आर्य वीर
दल, चौगांवा क्षेत्र, मेरठ (उ० प्र०)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४३. बालेश्वर सिंह आर्य बैरगनिया
भू० पू० संचालक, विहार

४४. „ कैलाश प्र० रक्सौल

४५. „ हीरा लाल प्र० „

४६. „ देवनन्दन प्र० „

४७. „ भरत प्रसाद आर्य „

४८. „ ब्र० विश्व नाथ जी „

४९. „ गया प्रसाद शर्मा

५०. „ वृज मोहन प्र० वीरगंज

५१. „ जंगाली प्र० „

व्यक्तित्व

जिनसे आर्यवीर दल आलोकित हुआ

५२. श्री श्यामसुन्दर जी विरमानी, मन्त्री
सार्वदेशिक आर्यवीर दल, दिल्ली प्रदेश,

५३. „ जयकृष्ण जी आर्य, मण्डल संचालक
उत्तरी क्षेत्र दिल्ली प्रदेश

५४. „ अशोक कुमार जी पठानिया, मण्डल संचालक
पूर्वी क्षेत्र, दिल्ली प्रदेश

५५. „ कृष्णमित्र जी कौशल, उपमंडल संचालक
पूर्वी क्षेत्र, दिल्ली प्रदेश

५६. „ स्वामी जीवनानन्द जी सरस्वती, आर्यवीर
सम्पादक हरियाणा

५७. „ गंगा कश्यप विद्यावाचस्पति संचालक
सार्वदेशिक आर्यवीर दल, गुवाहाटी, असम

५८. „ बुद्धदेव आर्य— वाराणणी

५९. „ मेवालाल जी आर्य „

६०. „ रामगोपाल जी आर्य „

६१. „ प्रेमचन्द जी आर्य „

★

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी ओर से

आर्य वीर दल को लेकर कुछ भी लिखने से पूर्व परम-पिता परमेश्वर को कोटिशः धन्यवाद कि जिसकी कृपा से मेरे साथ मेरे विचार जीवित हैं, जो आज से प्रायः ४० वर्ष पूर्व आर्य वीर दल के शिविर में मेरी आत्मा के भीतर अनुगुंजित हुए थे। शिविर से प्रशिक्षित होकर आया और आर्य वीर दल तथा आर्य समाज के साथ ही समाज सेवा की ओर अग्रसर हुआ।

आज जब मुड़ कर पीछे की ओर देखता हूँ तो लगता है तब और अब के बीच बहुत ही अन्तर आ गया है। दुनिया बदल गयी, जमाना बदल गया, जमाने के साथ इन्सान भी बदल गए, इन्सान क्या बदले, ईमान भी बदल गया। इस अदल-बदल में आर्य वीर दल के जाने कितने लोग, कहाँ से कहाँ चले गए। कुछ व्यक्ति. व्यक्तित्व को प्राप्त हुए लेकिन आज भी हमारे बीच कुछ ऐसे व्यक्तित्व हैं जो पहले की तरह अपनी पहचान बनाए हुए हैं।

मेरे भीतर आज भी वही आस्था भरी विचार धारा विश्वास लिए जीवित है। आर्य वीर दल में आया, उसे सादर स्वीकार किया। सम्पूर्ण नियम, दृढ़ता और संकल्प के साथ आज भी अपने स्थान पर हूँ। इससे अलग होने का प्रश्न ही नहीं है। आर्य वीर दल मेरे जीवन और आचरण के साथ दूध-पानी के समान मिला हुआ है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कई प्रांजल व्यक्तित्व मेरे सामने हैं, जिन्हें विगत चार दशक से देख रहा हूं, ऐसे व्यक्तित्वों में सर्व श्री ओम्प्रकाश त्यागी, बाल दिवाकर हंस, काशीनाथ शास्त्री, श्रीराम सिंह शिक्षक, श्री सत्यपाल (पलवल), श्री ऋषिनाथ जी तथा धर्मवीर जी जो वयोवृद्ध होकर भी पूरी शक्ति के साथ समाज की सेवा में समर्पित हैं। आज इनके हृदय में आर्यवीर दल के भविष्य के प्रति वही भावना जीवित है, जो पहले थी। हम इन व्यक्तित्वों के प्रति श्रद्धानत हैं।

हमारे लिये गौरव की बात है कि श्री बालदिवाकर हंस आज हमारे प्रधान संचालक हैं, जिनके अथक परिश्रम और प्रेरणा से आज आर्य वीर दल जीवित है, जिन्होंने दल की प्रगति और संगठन के लिए अपने को सम्पूर्ण रूप से समर्पित कर दिया है। श्री बाल दिवाकर हंस को मुझे समीप से देखने का सौभाग्य प्राप्त है। आज भी उनके जीवन का प्रत्येक क्षण आर्य वीर दल के उत्थान में लग रहा है। राष्ट्रभक्ति तथा समाज-सुधार की परम-पावन भावना आप को उत्तराधिकार स्वरूप प्राप्त है। भारतीय स्वाधीनता संघर्ष के मोर्चे पर श्री बाल दिवाकर हंस की अहम भूमिका एक साहसिक गाथा के रूप में अविस्मरणीय है। उल्लेखनीय है कि स्वतन्त्रता संग्राम के अग्रणी सूत्रधार राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, सुभाष चन्द्र बोस, जवाहर लाल नेहरू, राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन, हरिभाऊ उपाध्याय, गोकुल भाई भट्ट, जयनारायण व्यास, मास्टर भोलानाथ, माणिक्य लाल वर्मा, अचलेश्वर प्रसाद शर्मा आदि का सानिध्य इन्हें प्राप्त रहा है। श्रीबाल दिवाकर हंस ने एक दिन 'भारत छोड़ो, आन्दोलन के समय दिल्ली चाँदनी चौक पर लगी महारानी विक्टोरिया की प्रस्तर मूर्ति के ताज को तोड़कर रख दिया। एक साहसी स्वतन्त्रता सेनानी, क्रांतिकारी कवि और हिन्दी आन्दोलन के प्रबल प्रवर्त्तक के रूप में श्री बाल दिवाकर हंस का व्यक्तित्व आय

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

वीर दल के लिए एक धरोहर है। आपने हिन्दी की रक्षा के लिए भी जेल यातना सहन की और देश की स्वाधीनता के लिए भी।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे युवा उप संचालक डॉ० देवव्रत आचार्य की प्रतिभा तथा दक्षता भी आर्य वीर दल की निधि सिद्ध हो रही है। डॉ० देवव्रत जी का विनम्र स्वभाव साहस और संकल्प से भरी आकृति पर छा रही तेजस्वी छाया आर्य वीर दल को नया नेतृत्व प्रदान कर रही है। कुल मिलाकर श्री बाल दिवाकर हंस और डॉ० देवव्रत आचार्य आज आर्य वीर दल के सजग सूत्रधार के रूप में हमारे सामने हैं।

आर्यवीर दल अपने जन्मकाल से ही एक जागरूक प्रहरी के रूप में कार्य करता आ रहा है। आर्य वीर दल, आज हरियाणा और राजस्थान में अग्रिम पंक्तियों में है। इनके बाद उत्तर प्रदेश का क्रम आता है। हमारा विहार भी इसी पंक्ति में है। बिहार की भूमि पर कभी श्री ओम्प्रकाश त्यागी जी ने आर्य वीर दल की दुन्दुभि बजायी थी, जिसकी जय ध्वनि दूर वहुत दूर तक गयी थी। सन् १९४८ से १९५५ ई० तक सारे विहार में आर्य वीर दल की शाखाएँ संचालित थीं मुख्यतः रक्सौल, सुगौली, बेतिया, चनपटिया, रामनगर, बगहा, नरकटियागंज, सिकटा, घोडासहन, ढाका, मलाही, मोतिहारी, खगड़िया, मुंगेर, मुजफ्फरपुर, आरा, पटना दानापुर, गया, छपरा, सिवान आदि नगरों उप नगरों में सफेद सैनिक कमीज, खाकी पैंट और सिलहटी रंग की टोपियाँ लगाए आर्यवीर दल के स्वयं सेवक लाठियाँ लिए पंक्तिबद्ध सावधान मुद्रा में देखे जाते थे।

कहने का तात्पर्य कि चम्पारण, उत्तरी बिहार में अपना प्रमुख स्थान रखता था। विहार के आर्य वीर दल संचालकों में सर्व श्री (स्व०) रामनारायण शास्त्री शिवमित्र शास्त्री एवं भगवती शरण जी आदि नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। ये प्रांजल व्यक्तित्व मेरे लिए प्रेरणा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के प्रतीक रहे हैं। बिहार आर्य वीर दल का युवा-वर्ग श्री ओम्प्रकाश त्यागी तथा ब्रह्मचारी उषंबुध के व्यक्तित्व और कृतित्व से पूर्णतया परिचित है। स्मरणीय है कि श्री उषंबुध केन्द्रीय उप संचालक के रूप में बिहार आए थें।

नेपाल के आर्य वीर दल संचालक के रूप में मुझे श्री उर्षबुध जी और ओम्प्रकाश त्यागी जी के साथ कई बार नेपाल भ्रमण का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मेरे संचालन में नेपाल में आर्यवीर दल की प्रथम शाखा वीरगंज में स्थापित हुई पश्चात् रेशम कोठी, घरिअरबा (वीरगंज) मुरली, कलैया, अमलेखगंज, धुरसिंग, भीमफेदी, हेठौडा, भैंसिया आदि में आर्य वीर दल की शाखायें संचालित हुईं।

नेपाल की भूमि पर आर्य वीर दल को विधिवत् प्रसार का संयोग सुलभ हुआ। नेपाल की राजधानी काठमांडौ, ललितपुर, पाटन, भक्तपुर कालो माटी, सोनधारा टुड़ीखेल आदि स्थानों में भी शाखाएँ संचालित होने लगीं। काठमांडौ के भोटाहिटी नामक स्थान में कार्यालय खुला। नेपाल के अनेक विद्यालयों और महा विद्यालयों में मुझे व्यायाम का प्रशिक्षण देने का सुअवसर प्राप्त हुआ। इस स्थल पर यह उल्लेखनीय है कि नेपाल की शिक्षण संस्थाओं ने मुझे असीम स्नेह और आदर दिया।

नेपाल का एक विशिष्ट प्रसंग मेरे जीवन के साथ ऐतिहासिक स्वरूप ले चुका है, जब सन् १९५२ में प्रजातन्त्र के प्रवर्तक (स्व०) श्री ५ त्रिभुवन वीर विक्रम शाह देव की शाही सवारी के समय सेमरा हवाई अड्डे पर आर्य वीर दल की सैनिक कवायद तथा सैनिक सलामी (गार्ड ऑफ ऑनर) का संयोग मिला। (स्व०) श्री ५ त्रिभुवन वीर विक्रम शाह देव ने सैनिक सलामी का निरीक्षण किया। श्री ५ त्रिभु-वन वीर विक्रम शाह देव के सम्मान में आयोजित टुड़ीखेल (वीरगंज) की जन-सभा में श्री ५ त्रिभुवन वीर विक्रम शाह देव की सुरक्षा का

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तरदायित्व भी आर्य वीरों को दिया गया। नेपाल के आर्य वीर दल के लिए यह अत्यन्त ही रोमांचक और सम्मानपूर्ण संयोग था। मेरी और आर्य वीर दल के स्वयं सेवकों की तस्वीरें ली गयीं तथा अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित की गयीं।

श्री ५ महेन्द्र वीर विक्रम शाह देव के राज्याभिषेक (सन् १९५५) की शोभा यात्रा में नेपाल के आर्य वीर दल को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ। आर्य वीर दल की इस टुकड़ी का नेतृत्व संचालक के नाते मैंने किया था। टुड़ो खेल (काठमांडौ) के मैदान में आर्यवीर दल के आर्यवीरों ने जो लाठी प्रदर्शन किया, वह नेपाल के गण्यमान्य राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय दर्शकों द्वारा प्रशंसित किया गया।

आर्यवीर दल की सन्दर्भ श्रृंखला के साथ प्रस्तुत है—"आर्यवीर दल : एक परिचय" जो आर्यवीर दल के इति-वृत्त को लेकर एक संक्षिप्त परिचयात्मक विवरणी प्रस्तुत करता है। ये सन्दर्भ आर्यवीर दल के आर्यवीरों के लिए ही नहीं वरन् राष्ट्रीय जागरण की ओर अभिरुचि रखने वाले तरुणों के लिए भी प्रेरक सिद्ध हो सकते हैं। इस स्थल पर श्री रुद्र मित्र शास्त्री का स्मरण जिन्होंने आर्यवीर दल के लिए ध्वजा-गान की रचना की।

आर्यवीर दल के भावी कार्यक्रम को लेकर कुछ पंक्तियाँ निवेदित हैं—'मेरी हार्दिक अभिलाषा यह है कि हमारे आर्यवीर दल का जो स्वरूप सन् १९४८ से १९५५ ई० के बीच था, उस उपलब्धि को प्राप्त किया जाय। आज की राष्ट्रीय परिस्थिति और परिवेश में आर्यवीर दल की योजना यह है कि हमारे देश के युवक सच्चरित्र एवं अनु-शासित हों कि देश की अखंडता और एकता सुरक्षित रहे, साथ ही अपने देश भारत के युवा प्रधान मन्त्री श्री राजीव गाँधी को नई स्फूर्त्ति, नई शक्ति सुलभ होती रहे। यह समय का स्वर है, जिसकी प्रतिध्वनि चारो ओर सुनायी देने लगी है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी आन्तरिक आकांक्षा यह भी है कि आर्यवीर दल भारत को २१वीं सदी में प्रवेश के लिए, कहिये नये भारत के लिए युवा-पीढ़ी का सही प्रतिनिधित्व करे। हमने अपने को इस जागरूक संगठन के प्रति इसलिए समर्पित किया है कि हमारा देश विकास की बहुमुखी दिशाओं में आत्म-निर्भरता प्राप्त करें। हमारा भारत विश्व-मंच पर एक सशक्त शक्ति के रूप में प्रकाशमान ही नहीं, गतिमान भी रहे। यह तभी सम्भव है, जब हमारे राष्ट्र के युवकों में राष्ट्र-प्रेम की भावना जागती रहे।

हमारे युवा प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी ने घोषित किया है कि "समय समीप है, जब हमारा देश इक्कीसवीं सदी में प्रवेश करेगा।" राष्ट्र के इस यज्ञ में आर्यवीर दल को आगे आकर आहुति देनी होगी और यही अपने राष्ट्र के प्रति सच्ची कर्त्तव्यशीलता होगी।

अन्त में त्रुटियों के लिए विनम्र क्षमा याचना के साथ यह छोटी सी कृति 'आर्यवीर दल' : एक परिचय आपके समक्ष प्रस्तुत है। आशा है, आप इसे सहृदयता के साथ स्वीकार करेंगे।

—रामाज्ञा वैरागी

वैरागी कुटीर
पंजाबी कालोनी,
कलम बाग चौक : मुजफ्फरपुर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्यवीर-दल

स्थापना और उद्देश्य

आर्य समाज की स्थापना और कुशल संचालन के बाद आर्य-कुल की आने वाली पीढ़ी के प्राणों में स्फूर्ति एवं चेतना जाग्रत करने के साथ सक्रिय जीवन जीने की कल्पना को सामने रखकर 'आर्यवीर दल' की स्थापना पर विचार किया गया। इस लक्ष्य के लिए दृष्टि यह रखी गयी कि आर्यवीर-दल या ऐसा कोई संगठन आर्य समाज के लिए सुरक्षा पंक्ति ही नहीं रक्षा-कवच सिद्ध हो सके।

वस्तुस्थिति स्पष्ट है कि आर्य समाज को कई धार्मिक और सामाजिक मोर्चों पर कठिन संघर्ष के पथ से गुजरना पड़ा था। संघर्ष के इन मोर्चों पर आर्य समाज ने जो अनुभव किया उसी का स्पष्ट प्रमाण है आर्यवीर दल की स्थापना और उसका संगठन। सन्दर्भ साक्षी हैं कि सन् १९२७ ई० के सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन दिल्ली में महात्मा हंसराज जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। सार्वदेशिक आर्य महा सम्मेलन के इस मंच से महात्मा हंसराज जी की जीवित प्रेरणा और प्रयास से आर्यवीर दल की स्थापना का प्रस्ताव स्वीकृति हुआ। आर्यवीर दल की स्थापना के साथ यह वर्ष और सार्वदेशिक आर्य महा सम्मेलन का वह ऐतिहासिक अधिवेशन अविस्मरणीय तथा उल्लेखनीय माना

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाता है। कहने का तात्पर्य कि आर्यवीर दल का जन्म जिन ऐतिहासिक क्षणों में हुआ, उन अभूतपूर्व क्षणों की गरिमा से अभिभूत और उत्प्रेरित होकर आर्यवीर दल ने अपने जन्म के दिन से ही सांस्कृतिक, सामाजिक तथा शारीरिक विकास के क्षेत्र और दिशा में उत्साह, दृढ़ संकल्प और शालीन धैर्य के साथ आर्य समाज तथा सामान्य जनता के बीच अपना अनुकरणीय आदर्श उपस्थापित किया। आज आर्यवीर दल का अखिल भारतीय स्वरूप और संगठन है। भारत के प्रायः सभी प्रदेशों में आर्यवीर दल का जीवित-जाग्रत संगटन है। सन्दर्भ है कि सार्वदेशिक सभा ने दिसम्बर सन् १९२९ में आर्यवीर दल को स्वीकृति दी और सभा ने ही सन् १९३६ ई० में आर्यवीर दल के नियमों को संशोधित किया और विधिवत् स्वीकृति देकर लागू किया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सांस्कृतिक दिशा की ओर

आर्य वीर दल, साम्यवाद (कम्यूनिज्म) की धर्म-विहीन साम्प्रदायिकता से अलग, मुस्लिम लीग या अन्य मतान्ध साम्प्रदायिकता से बहुत दूर एक सांस्कृतिक संगठन के रूप से विकसित हुआ, जिसका आधार आर्य-कुल की मान्यतायें हैं। इस बात के प्रमाण हैं कि आर्य वीर दल ने कांग्रेस की मुस्लिम समर्थक और पोषक नीतियों का विरोध किया। भारत की जनता ने इस विरोध का स्वागत किया। इसी का परिणाम है कि कई दिशाओं में आर्यवीर दल को सफलतायें मिलीं।

आर्यवीर दल का एक निश्चित और निर्धारित पथ रहा है और यह संगठन अपने निरूपित उद्देश्य के साथ अपने पथ पर अग्रसर होता रहा। आर्यवीर दल ने आर्य-समाज के बाहर के क्षेत्रों के युवकों को आकर्षक कार्यक्रम ही नहीं वरन् क्रांतिकारी विचार धाराओं से अपनी ओर आकर्षित कर आर्य-धर्म की ओर प्रभावित किया। इस प्रकार हमारे आर्य-युवक क्षात्र-धर्म की गौरवमयी विचार धारा में दीक्षित हुए। आर्य वीर दल ने नवयुवक हृदयों में विनम्र सेवा-भावना के साथ ही क्रांतिकारी भावनाओं को प्रतिष्ठित कर पूर्ण आर्य बनाने का प्रयास किया। इस प्रयास को सफलता के सोपान मिले।

राष्ट्र की राजनीतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक निर्माण की दिशाओं में आर्य वीर दल ने वैदिक संस्कृति को आधार बनाकर कार्य करना शुरू किया, कई अभूतपूर्व सफलतायें उसके समीप आयीं। भारत के कई

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रदेशों में ऐसे बड़े मेले आयोजित किए जाते थे, जहाँ चरित्र हीनता के अभिशाप की मैली चित्रावली देखी जा सकती थी जो आर्य जाति के वंशज की अवनति का उदाहरण बन चुकी थी। यहाँ गन्दी गालियाँ बकी जातीं, गन्दे अभिनय और नाटक प्रदर्शित किए जाते। इन अश्लील प्रदर्शनों के द्वारा हमारे संस्कारों पर आक्रमण किया जाता। आर्यवीर दल ने इस ओर विशेष अभिरुचि के साथ कार्य करना शुरू किया। राष्ट्र के प्रबुद्ध लोगों ने आर्य वीर दल की इस भूमिका को सादर समर्थन दिया और प्रशन्सा की। आर्यवीर दल की सांस्कृतिक गतिविधियों से प्रभावित कितने ही नवयुवकों के चरित्र का निर्माण आर्यवीर दल की गौरवमयी उपलब्धि सिद्ध हुई। ऐसे नवयुवकों की लम्बी सूची है, जो चरित्र हीनता के कारण अपने जीवन को विनाश के कगार तक पहुँचा चुके थे। आर्य वीर दल के प्रयास से ये नवयुवक जीवन की सही दिशा की ओर उन्मुख हुए। युवकों में चारीत्रिक एवं ब्रह्मचर्य की भावना का प्रसार हसारे सांस्कृतिक संगठन आर्यवीर दल का निश्चित उद्देश्य और स्पष्ट लक्ष्य रहा। आर्यवीर दल के साथ यह विशेषता आज भी है कि वह अपने लक्ष्य और उद्देश्य से विमुख नहीं हुआ है। यह स्वीकार किया जाय कि जीवन के इस विशिष्ट क्षेत्र में जो कल्पनातीत सफलता आर्यवीर दल को प्राप्त हुई, वह सफलता किसी अन्य संस्था या संगठन को प्राप्त न हो सकी।

आर्यवीर दल आज भी अपने स्थान पर सेवारत ही नहीं कार्यरत भी है और आर्यवीर दल की शाखाओं में ७५ प्रतिशत आर्येत्तर युवक सहर्ष सम्मिलित होकर 'वेद की जय' वैदिक धर्म की जयकार करते आर्यकुल की परम्पराओं से प्रभावित होकर आर्य बन जाने में गौरव का अनुभव करते हैं। भारतीय संस्कृति की रक्षा में आर्यवीर दल की इस ऐतिहासिक भूमिका और योगदान को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। यही कारण है कि आर्यवीर दल ने देश के सांस्कृतिक संगठनों में अपनी विशिष्ट भूमिका का निर्वाह किया है और अपनी अलग पहचान बना ली है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शारीरिक स्वास्थ्य विकास

युवकों की पीढ़ी, राष्ट्र के भविष्य की आधार शिला होती है। इस आधार-शिला को सशक्त रखने के लिए युवकों के शारीरिक स्वास्थ्य के के विकास की दिशा में आर्यवीर दल का प्रयास हमारे सामने है। आर्यवीर दल की शाखाओं और शिविरों के माध्यम से युवकों को पूर्ण अनुशासित जीवन जीने और ब्राह्म मुहूर्त्त में उठने की प्रवृत्ति को जाग्रत करने की प्रेरणा दी जाती है। इन शाखाओं के माध्यम से शारीरिक शक्ति को सशक्त बनाने का प्रयत्न किया जाता है। दैनिक व्यायाम का अभ्यास युवकों के लिए सक्षम सिद्ध होता है। ऐसे असंख्य उदाहरण हमारे समक्ष हैं, जो आर्यवीर दल से सम्बद्ध होने से पूर्व आचरण हीन ही नहीं शक्ति से क्षीण हो चुके थे, उनके भीतर संगठित चरित्र शक्ति का निर्माण ही नहीं हुआ, वरन् उनके भीतर नवजीवन का संचार हुआ। वे एक आदर्श और साहसी युवक के रूप में, समाज के बीच प्रतिष्ठित हुए।

आर्यवीर-दल की स्पष्ट मान्यता है कि चरित्रवान युवक ही जाग्रत राष्ट्र के निर्माण में सही भागीदार होते हैं। युवकों का चरित्र ही, राष्ट्रीय चरित्र को निरूपित करता है। आर्य वीर दल आज भी अपने इसी लक्ष्य और उद्देश्य को लेकर अग्रसर है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साधना की भूमि

पृथ्वी राष्ट्र का शरीर है, जनता प्राण है और संस्कृति है—'मन' शरीर, प्राण और मन के सम्मिलन से ही राष्ट्र की आत्मा का निर्माण होता है। भारतीय तात्पर्य आर्य संस्कृति की स्पष्ट परिभाषा है—'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' और हमारी सांस्कृति का स्वर है—सर्वे भवन्तु सुखिनः···। इस परिभाषा के अध्ययन के लिए शिक्षा और स्वाध्याय अनिवार्य है। वेदों में उत्तम कोटि के राष्ट्र-निर्माण के लिए मानसिक तेज तथा शारीरिक शक्ति की प्राप्ति के लिए प्रार्थना की गयी है, इसी दृष्टि से इस परम-पावन लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आर्य वीर दल की ओर से स्वाध्यायी प्रवृत्ति को अनुप्रेरित करने, ब्रह्मचर्य धर्म का पालन करने के साथ ही शारीरिक स्वास्थ्य की समुन्नति के लिए और उन विशिष्ट गुणों को ओर अभिरुचि जाग्रत करने के लिए साधना भूमि और साधना मंदिर के निर्माण की योजना को अंतिम रूप दिया गया। आर्यवीर दल की ओर से भारत के विभिन्न प्रदेशों में बहुत-से साधना—स्थल संस्थापित किए गए। प्रति वर्ष इनकी संख्या में वृद्धि होती गयी। यह योजना समग्र रूप से प्रशंसित और प्रतिष्ठित हुई।

इन साधना मन्दिरों के साथ व्यायामशाला तथा पुस्तकालय स्थापित किए गए। यह मानकर कि व्यक्ति के निर्माण में पुस्तकालयों की विशिष्ट भागीदारी को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। इसलिए इन पुस्तकालयों

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

में चरित्र-निर्माण में योगदान करने वाली पुस्तकें संगृहीत की गयीं।
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आज इन साधना मंदिरों में जीवन निर्माण का स्वस्थ साहित्य और व्यायाम के समस्त आधुनिक साधन सुलभ हैं। इन साधना स्थलों पर आर्य-युवक बिना किसी भेद-विभेद के एकत्र होते हैं। वे नियमपूर्वक स्वाध्याय ही नहीं करते वरन् अपनी प्रवृत्तियों का विकास भी करते हैं। इन साधना मंदिरों के भीतर पूर्ण अनुशासित जीवन का प्रावधान है। साधना मंदिर के इन व्यवस्थित साधना-स्थलों में आर्य वीर दल व्यायामशालाओं में हमारे आर्य-युवक अपने चरित्र के साथ ही सामाजिक चरित्र का निर्माण तथा विकास करते हैं। पूर्ण ब्रह्मचर्य, इन व्यायाम-शिविरो की मर्यादा होती है। वे व्यायाम के द्वारा अपनी शारीरिक शक्ति को सम्पन्न और सशक्त बनाते हैं।

इन साधना मंदिरों में मात्र युवक ही नहीं, बच्चे और वृद्ध-जन भी नयी शक्ति, नयी स्फूर्त्ति और नवीन प्रेरणायें ग्रहण करते हैं। आर्य वीर दल की ओर से संचालित इन साधना स्थलों में स्वाध्याय, चारीत्रिक विकास तथा स्वस्थ शारीरिक साधना की शिक्षा दी जाती है और अब इनमें योग-साधना की शिक्षा भी दी जाने लगी है।

☆

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिविर-प्रबंध

आर्य-वीर-दल की ओर से देश के विभिन्न स्थानों में शिविरों का प्रबन्ध किया गया। इन शिक्षण शिविरों ने आशातीत सफलतायें प्राप्त कीं। आर्य-वीरों के बौद्धिक और सामाजिक विकास में इन प्रशिक्षण-शिविरों का. महत्त्वपूर्ण सहयोग रहा। स्मरणीय है कि इन शिविरों के माध्यम से व्यायाम, शिक्षा, बौद्धिक विकास की उच्चकोटि की व्यवस्था की जाने लगी। शनै-शनै इन शिविरों के प्रति युवकों की अभिरुचि जाग्रत हुई। आर्य-वीर-दल की ओर से आयोजित ये शिक्षण-शिविर आकर्षण और नये सकल्प के केन्द्र बनते गए। ऐसे युवक भी जो अपने समाज के बीच आचरणहीन या चरित्रहीन माने जाते थे। आर्य-वीर दल की ओर से संयोजित शिविरों के भीतर प्रविष्ट हुए। इन प्रशिक्षण और शिक्षण-शिविरों के भीतर उनके चरित्र को नया जीवन मिला, जीवन के नये पथ मिले। वे ही युवक जब लौटकर अपने घर-परिवार और नगर-ग्राम के भीतर गए, तो उनके साथ उच्च चारोत्रिक चेतना, स्वाध्याय की पावन प्रवृत्ति, अनुशासन के सामाजिक संगठन की भावना, आर्य-कुल को उद्दात्त विचारधारा उनके साथ अक्षय-कोष बनकर गयो। यह स्वीकार किया गया कि ब्राह्म और क्षात्र धर्म की सजग समन्वित शक्ति उनके साथ गयी।

आर्य-वीर दल का इतिहास प्रमाण है कि समय-समय पर सुविधा-नुसार अब तक कई हजार शिविर लगाए जा चुके हैं। इन शिविरों से,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

इन शिक्षण-मंदिरों से हजारों आर्य-वीर शिक्षित-प्रशिक्षित ही नहीं,
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दीक्षित होकर बाहर आए और उन्होंने अपने आर्य-धर्म तथा राष्ट्र के प्रति अपने को समर्पित किया। वे आर्य-वीर जो समाज के बीच तिरस्कार की भावना और घृणा की दृष्टि से देखे जाते थे, आर्य-वीर दल के शिक्षण-शिविरों से वापस लौटने के बाद एक आचरणवान की तरह जीवन को जीना आरम्भ किया।

यह कल्पना सहज ही की जा सकती है कि आखिर यह आकस्मिक परिवर्त्तन कैसे हुआ? उसका आधार क्या था? इस स्थल पर यह विशेष रूप से उल्लेख्य है कि आर्य-वीर दल के इन शिविरों में भारत भूमि पर सांस्कृतिक-सामाजिक क्रांति प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा निर्देशित-निरूपित तथा प्रतिपादित शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक सांस्कृतिक विकास के कार्यक्रम को सम्पूर्ण निष्ठा सहित क्रियात्मक रूप देने का प्रयास किया जाता रहा। आर्य-वीर दल के शिविर संयोजन में क्रांतिदर्शी महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचारों को आदर के साथ प्राथमिकता देने की कोशिश की गयी। यही कारण है कि हमारे असंख्य आर्य-वीर अपने समाज के लिए आदर्श बन गए।

आर्य-वीर-दल के शिविरों, शाखाओं, साधनास्थलों तथा शिक्षण-शिविरों में सामाजिक संगठन, सहयोग, सहिष्णुता, व्यावहारिक जीवन आदर्श चरित्र-निर्माण, आत्मानुशासन के साथ कार्य करने की प्रवृत्ति की ओर विशेष अभिरुचि ली गयी और विशेष ध्यान दिया गया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेवा का शुभारम्भ

भारत की भूमि स्वाधीनता संघर्ष की रणभेरी सुन रही थी। इस रणभेरी की स्वर-लहरी से आर्य-वीर दल के आर्य-वीर प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके। इस स्थल पर यह उल्लेखनीय है कि सन् १९४२ भारतीय स्वाधीनता संघर्ष का निर्णायक वर्ष है लेकिन यही वर्ष आर्य-वीर दल के लिए भी महत्त्वपूर्ण माना जाता है। आर्य-वीर दल को वर्त्तमान अखिल भारतीय स्वरूप भी सन् १९४२ में ही प्राप्त हुआ। आज अखिल भारतीय आर्य-वीर दल की छोटी-बड़ी इकाइयाँ सारे देश के भीतर हैं। आर्य-वीर दल की इन इकाइयों में आज भी संगठन के प्रति जागृति देखी जा सकती है। अखिल भारतीय आर्य-वीर दल का अखिल भारतीय स्वरूप एक विशिष्ट उल्लेखनीय रूप को प्राप्त है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संगठन का इतिहास

आर्य-वीर दल ने अपनी कार्य क्षमता के बल पर आर्य-समाज की जो सेवा की वह इस संगठन के इतिहास में सदा ही अविस्मरणीय रहेगी। आर्य वीर दल एक स्वयंसेवी संगठन के रूप में विगत ६ दशक से अपनी अलग पहचान बनाये आर्य समाज से जुड़ा है। आर्य वीर दल, आर्य समाज के अभिन्न अंग के रूप में सेवा रत है। आज की राजनीति से बिलकुल अलग सामाजिक जीवन में सामाजिक जीवन के निर्माण में आर्य वीर दल ने उल्लेखनीय सफलतायें प्राप्त की हैं। इन्हीं महान उपलब्धियों के साथ आर्य वीर दल का इतिहास भी सन्निहित है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य समाज के प्रति समर्पित

अखिल भारतीय आर्य-वीर दल ने अपने आकर्षण भरे कार्यक्रम के माध्यम से बिना किसी मंचीय प्रचार-प्रसार के देश के असंख्य युवकों को आर्य समाज की ओर आने के लिए अनुप्रेरित किया। ऐसे युवकों को भी उसने आर्य-समाज की ओर उन्मुख किया, जो आर्य समाज से अलग थे। आर्य समाज के लिए, आर्य वीर दल की यह सफलता अपना असाधारण महत्त्व रखती है।

आर्य समाज से जुड़े लोग ही नहीं आर्य समाज के प्रति समर्पित व्यक्ति इस सच्चाई से पूर्णतया परिचित हैं कि जहाँ आर्य समाज सर्वथा मरणासन्न हो चुका था, या मृत हो चुका था, आर्यवीर दल ने अपने सक्रिय कार्य क्रम से वहाँ के आर्य समाज को नया जीवन ही नहीं दिया, वरन् उसे नयी दिशा देकर प्राणवान किया। आर्य समाज की ओर से आयोजित समारोहों, नगर कीर्त्तन से लेकर महाधिवेशनों और महा सम्मेलनों में आर्यवीर युवकों ने छोटे-से छोटे कार्यों के सम्पादन में किसी प्रकार के संकोच का अनुभव नहीं किया। हमारे आर्यवीरों ने सभा मण्डप में बिछावन बिछाया और समागत अतिथियों को पानी पिलाकर परितृप्त किया। महासम्मेलनों का सम्पूर्ण प्रबन्ध ही नहीं, दर्शकों और श्रोताओं को सदा ही संयम के साथ नियन्त्रित रखने में अपनी अपूर्व क्षमता का परिचय दिया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्यवीरों को देखकर यह आश्चर्य होता है कि सम्भ्रान्त और सम्मानित धनी परिवारों के बच्चे भी अपने साथियों के कन्धे से कन्धा मिलाकर अपनी सेवाएँ समर्पित करते हैं। ऐसे सेवा कार्यों के प्रति उनकी जिज्ञासा और अभिरुचि आर्यवीर दल की ही देन है। आर्य समाज के छोटे-बड़े सम्मेलनों में ऐसे अवसर भी यदा-कदा आते हैं, जब असामाजिक तत्वों द्वारा संचालित हो रहे समारोह में बाधा उत्पन्न करने का प्रयास किया जाता रहा है। ऐसे अवसरों पर आर्यवीरों ने अपने प्राण और जीवन की चिन्ता किए बिना बाधा डालने वाले खौफनाक तत्त्वों को धर दबोचा। आर्य समाज के जीवन में ऐसे अनेक अवसर आये हैं। हमारे आर्यवीरों ने अनुशासनहीनता के विरुद्ध सतत संघर्ष किया है और उस पर विजय भी प्राप्त की है। लाठी, तलवार और गोलियों की अन्धाधुन्ध वर्षा के बीच हमारे आर्यवीर सदा ही आगे की ओर बढ़ते रहे और अपने श्रम, साहस तथा लहू से आर्य समाज की रक्षा करते हुए अपने जीवन की आहुति दी, स्वयं को बलिदान किया लेकिन समाज के बालकों और महिलाओं की प्रतिष्ठा की रक्षा करते हुए आर्य समाज के आदर्शों को अक्षुण्ण रखा। यह कोई साधारण बात नहीं है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्र के लिए

आर्यवीर दल राष्ट्र की आत्मा के साथ जुड़ा हुआ संगठन रहा है। इसने आर्य समाज की उल्लेखनीय सेवा की है। आर्यवीर दल ने मानवता की अथक सेवा भी की है। भारत की साधारण जनता की सेवा भी सदा आगे बढ़कर करते रहने का संकल्प लिया है। यह निःसंकोच कहा जा सकता है कि जहाँ तक साहस और संकल्प के साथ राष्ट्र की सेवा का प्रश्न है, आर्यवीर दल इस दिशा में अग्रणी रहा हैं। आर्यवीर दल का जन्म ही सेवा-भावना के आधार पर हुआ है इसलिए यह स्वयंसेवी संगठन के रूप में ही ख्याति प्राप्त है।

आर्यवीर दल की ओर से की गयी सेवाओं की दिशा बहुमुखी रही है। उसका लक्ष्य और उद्देश्य असीम रहा है। आज भी यह संगठन इसी रूप में कार्य कर रहा है। आर्यवीर दल की ओर से की गयी राष्ट्रीय सेवाओं की संक्षिप्त रूप रेखा प्रस्तुत है—

(१) इस संगठन का जन्मकाल है सन् १९४२ और यह वर्ष है अगस्त की महान निर्णायक क्रांति का। अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने अंग्रेजी प्रशासन के विरुद्ध 'भारत छोड़ो' का नारा दिया और क्रांति का बिगुल बजा दिया। ब्रिटिश सामाज्यवाद के विरुद्ध आहूत क्रांति में आर्यवीर दल के आर्यवीरों ने सक्रिय भाग लेकर भारत की स्वाधीनता के लिए किए गए कठिन संघर्ष में साहसिक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योगदान किया। महान अगस्त क्रांति में आर्यवीर दल के कई साहसी कार्यकर्ताओं को फाँसी के फन्दे पर झूलना पड़ा।

(२) बंगाल के मिदनापुर क्षेत्र के आस-पास आये भीषण सामुद्रिक प्रलयंकारी तूफान से सैकड़ों गाँव विनाश के कगार पर पहुँच गये। आर्यवीर दल के साहसी सदस्यों तथा कार्यकर्ताओं का दल मिदनापुर पहुँचकर चार-पाँच महीने तक सेवा कार्य करता रहा और तूफान पीड़ित जनों की सहायता की।

(३) वर्ष १९४३ बंगाल की जनता के लिए एक अत्यन्त ही दुखद वर्ष माना जाता है। सन् १९४३ के काल जैसे अकाल के समय बंगाल के प्रायः ४५ लाख लोग मौत के शिकार हुए। वंगाल का यह दुर्भिक्ष राष्ट्रीय संकट का स्वरूप लेकर देश के सामने खड़ा हुआ। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि-सभा, तथा पंजाब की आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आर्यवीर दल ने वंगाल की भूमि पर सेवा कार्य का शुभारम्भ कर लाखों रुपये की जीवनोपयोगी सामग्री वितरित की। इस प्रकार आर्यवीर दल ने लाखो अकाल पीड़ित लोगों के प्राणों की रक्षा की। बंगाल के अकालग्रस्त लोगों की सेवा आर्यवीर दल के इतिहास में एक जीवन्त परिच्छेद बनकर आज भी जीवित है। स्मरणीय है कि बंगाल के दुर्भिक्ष के बाद लोकमानस की ध्वनि आर्य समाज को उत्प्रेरित करती रही और आर्य समाज अग्रसर हुआ बंगाल के बाढ़-पीड़ितों की सहायता के लिए। पंजाब से एक पूरी मालगाड़ी एक आर्य श्रेष्ठि बाबा गुरुमुख निहालसिह ने चावलों से लदवा दी और श्री खुशहालचन्द खुसंद मालिक मिलाप से कहा—'खुशहाल, मेवा करने हैं या माल-मलीदा ही चखना है?' दृढ़ निश्चयी खुशहाल ने कहा—'माल मलीदा भी चखना है और सेवा भी करनी है तो बाबा गुरुमुख निहाल सिंह ने आग्रह किया—"सेवा बंगाल

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
के अकाल पीड़ितों को करना और मलाई मलीदाँ बाबा दाँ चखना।"
बंगाल की दुर्भिक्ष-पीड़ित भूमि पर जो सेवा मानव-मात्र की उस समय आर्य समाज के माध्यम से आर्यवीरों ने की वह आर्य समाज के इतिहास में अविस्मरणीय रहेगी। यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि ब्रिटेन के तत्कालीन प्रधानमंत्री सर विन्स्टन चर्चिल ने भी आर्य समाज को सेवा भावना की भूरि-भूरि प्रशंसा की थी।

(४) हमारा इतिहास गवाह है कि बंगाल में ही मुसलिम लीग की सरकार थी, जिसके सर्वेसर्वा थे फजलुलहक। फजलुलहक की हुकूमत में बंगाल के हिंदुओं के विरुद्ध कई प्रकार के षडयन्त्र रचे जाने लगे। हिंदुओं की परेशानी बढ़ने लगी। बंगाल के खाकसार आतंकवादी हिंदुओं के बच्चों को बलात उठा ले जाते, स्त्रियों को तरह-तरह से अपमानित किया जाता। इस भयावह वातावरण में देश की कोई संस्था इस अनाचार के विरुद्ध जूझने को तैयार न की। किसी संगठन का हाथ आगे नहीं बढ़ा लेकिन आर्यवीर दल इन अत्याचारों के विरुद्ध संघर्ष के लिए आगे आया और साहस, संकल्प एवं वीरता के साथ उन खाकसार गुण्डों का सामना किया। आर्यवीर दल की गुप्तचर शाखा ने अपने प्रयास से असंख्य बालकों को खाकसार गुण्डों के पंजे से मुक्त कराने में भी सफलताएँ प्राप्त कीं। हमारे आर्यवीरों ने खाकसारों की दरिन्दगी को समाप्त कर एक नये वातावरण की संरचना की। ऐसे वातावरण की, जहाँ हिन्दू निर्भय होकर जीवन-यापन कर सकें।

(५) भारत के विभिन्न प्रदेशों या प्रान्तों में स्थान-स्थान पर लगने वाले छोटे-बड़े मेलों में होने वाली गुण्डागर्दी और बवाल आम बात रही है लेकिन आर्य वीर दल ने इन गुण्डागर्दियों के विरुद्ध व्यवस्थित और एक जुट होकर अभियान चलाया। इस आन्दोलन में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हमारे आर्य वीरों के साहस की प्रशंसा की गई। आज भी ऐसे अवसर आते हैं जहाँ देश के विभिन्न स्थानों में हमारा आर्य वीर दल अपनी साहसिक सेवायें एक उद्देश्य के लिए समर्पित करता है।

(६) ऐसे अनेक उदाहरण हमारे सामने हैं और आपके सामने भी कि कितने ही नगरों में जहाँ सम्प्रदायवादी आततायी गुण्डों के कारण हिन्दुओं के धार्मिक या सांस्कृतिक जुलूस नहीं निकल पाते थे। हमारे आर्य वीरों ने आपने अजेय साहस के बल पर उस आतंक भरे वातावरण पर विजय प्राप्त की और भविष्य के लिए पथ को प्रशस्त कर दिया। ऐसे क्षेत्रों में आर्य वीर दल की ये उपलब्धियाँ कोई साधारण नहीं है।

(७) भारत की स्वाधीनता से पूर्व १६ अगस्त १९४६ से १५ अगस्त १९४७ की अवधि भारतीय जनता के जीवन और मृत्यु की अवधि रही है। इस अवधि में, सीमा प्रान्तों में जो लहू से भरे साम्प्रदायिक उपद्रव हुए, वे दिल को दहला देने वाले थे लेकिन हमारे आर्य वीरों ने उस उफनते लहू के तूफान के बीच अपने साहस और संकल्प का दीपक जलाकर असंख्य हिन्दुओं के जीवन की रक्षा की। यह स्मरणीय है कि उन तूफानी अभियानों में श्रद्धेय श्री ओम्प्रकाश पुरुषार्थी ने प्रधान सेनापति के रूप में अपनी शानदार और आनदार भूमिका निभायी। आर्य वीर दल के इस अभियान से सीमा-प्रान्तों की निरीह जनता को जो शक्ति मिली, वह भविष्य के लिए जीवन-दायी सिद्ध हुई। कलकत्ता और नोआखाली के नृशंस हत्याकांडों में भी हमारे साहसी आर्य वीरों ने वीरता और सम्मान के साथ मानवता के शत्रुओं को पराजित ही नहीं किया वरन् सीधा पाठ पढ़ाया। देश के समाचार-पत्रों ने आर्य वीर दल की भूमिका की भूरि-भूरि प्रशंसा की। कई समाचार पत्रों ने आर्य वीर दल को लेकर अपनी ओर से अग्रलेख भी लिखे। इस स्थल पर यह विशेष

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
रूप से उल्लेखनीय है कि पूज्य महात्मा गांधी के नोआखाली पहुँचने से दो महीने पूर्व ही आर्य वीर दल के वीर नोआखाली की भूमि पर छा गए थे। आर्य वीर दल के पास सहायता और सेवा के लिए सीमित साधन था फिर भी बंगाल के उपद्रव से प्रभावित लोग सरकारी सहायता शिविरों में कम देखे जाते थे, आर्य वीर दल के सहायता केन्द्रों से अधिक लोग लाभान्वित होते थे। इसके पीछे मूल कारण यह था कि आर्य वीर दल के आर्य वीरों में विनम्रता, सहानुभूति की लहर थी और प्रबन्ध भी सन्तोषजनक था। बंगाल की इन तूफानी घड़ियों में आर्य वीर दल ने अपनी सेवाओं से बंगाल की असहाय और निरीह जनता की जो सेवा की वह अपने आप में एक उदाहरण है। धैर्य सहनशीलता और सेवा आर्य वीर दल की संचित और अर्जित निधि है।

(८) भारत के विभाजन के बाद जब कई लाख लोग बंगाल से शरणार्थी होकर आए तो एक कारुणिक दृश्य उपस्थित हुआ। लाखों अत्याचार पीड़ित हिन्दू अपने भरे-पूरे संभ्रान्त समृद्ध घरों को छोड़कर एक असहाय विस्थापित का जीवन जीने को विवश हुए। ऐसी दुखद घड़ी में भी आर्य वीर दल ने सेवा का व्रत लिया और आर्य वीर दल के आर्य वीर बंगाल पहुँचे और उनके रख-रखाव में प्रबन्ध और व्यवस्था में योगदान किया। आर्य वीर दल के सेवा कार्यों से प्रेरित-प्रभावित होकर पश्चिम बंगाल के तत्कालीन मुख्य मंत्री श्री बी० सी० राय ने आर्य वीर दल की सेवाओं की प्रशंसा की। यह उल्लेखनीय है कि आर्य वीर दल ने पाकिस्तानी सीमा से सटे अपना सेवा-शिविर स्थापित किया और आनेवाले शरणार्थियों की सम्यक सहायता की। स्मरणीय है कि भारतीय सीमा के भीतर स्थापित आर्य वीर दल के सेवा-शिविर की दूरी सौ गज से भी कम थी। इस कार्य में आर्य वीरों को कई बार अपने प्राणों

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
की बाजी भी लगानी पड़ी। आर्य वीर दल के जवानों के साथ पूर्वी पाकिस्तान (अब बंगलादेश) के अंसार गुण्डों के साथ सीधी झड़प और मुठभेड़ हुई लेकिन आर्य वीर दल के आर्य वीरों ने कठिन साहस के साथ उनका सामना करते हुए पराजित किया। ये घटनाएँ आज भी बोलती हैं कि एक बार पूर्वी पाकिस्तान की सीमा पर स्थापित जय नगर के आर्य वीर शिविर पर सीमा को पार कर पाकिस्तान के अंसार गुण्डों ने हमला कर दिया। इन अंसार गुण्डों की पीठ पर पाकिस्तान की पुलिस का सीधा हाथ था। घटना क्रम आगे बढ़ा और वह समय भी सामने भयावह रूप लिए आया जब लगातार ३६ घंटे तक आर्य वीरों और अंसार गुण्डों के बीच परस्पर गोलियों का आदान-प्रदान होता रहा। उस समय शिविर में भारतीय पुलिस के मात्र चार सिपाही थे। इनमें से एक बीमार था लेकिन आर्य वीर दल के प्रधान सेनापति श्रीओम्प्रकाश पुरुषार्थी ने अद्‌भुत वीरता दिखायी। गोलियों का जवाब गोलियों से देते रहे, जब तक, तब जक सरकारी सहायता सुलभ न हो सकी वे अकेले ही जूझते रहे और पाकिस्तानी गुण्डों को भारतीय सीमा के भीतर आने न दिया। भारतीय पुलिस दल के आ जाने के बाद भी वे पीछे न हटे और भारतीय पुलिस को सहयोग किया। पुरुषार्थी जी के शौर्य भरे पुरुषार्थ से प्रभावित होकर वहाँ के जिला मजि-स्ट्रेट ने उन्हें सम्पूर्ण शिविर का प्रभारी घोषित किया। शरणा-र्थियों के सेवा-कार्य के लिए आयी समस्त सहायता समितियों और संस्थाओं की सम्मिलित सभा ने यह प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत किया कि भविष्य में यदि इस प्रकार की कोई घटना घटती है तो सभी लोग अपने प्रभारी श्रीपुरुषार्थी जी के निदेशानुसार ही कार्य सम्पादित करेंगे। आर्य वीर दल के लिए यह घटना एक असा-धारण महत्व रखता है। भारत विभाजन के बाद जो घटनाएँ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे सामने आयीं, आर्य वीर दल ने उन घटनाओं को मूक-दर्शक होकर नहीं, आर्य वीर के संस्कारों के साथ देखा।

(९) आर्यवीर दल की गतिविधि ने सारे देश को ही आन्दोलित किया। उस दिन भी यह सर्वविदित था कि यह एक स्वयंसेवी संगठन मात्र है और सेवा की परम पवित्र भावना ही इस संगठन की थाती है लेकिन सरकार की तीखी दृष्टि आर्यवीर दल की ओर गयी। महात्मा गांधी की निर्मम हत्या के बाद देश की प्रायः सभी साम्प्रदायिक संस्थाओं पर सरकार की ओर से प्रतिबन्ध लगा दिया गया तो बिहार सरकार ने भूल से आर्यवीर दल को भी एक साम्प्रदायिक संगठन मानकर बिहार में आयवीर दल पर प्रतिबन्ध लगा दिया। बिहार विधान सभा में यह विषय उठाया गया। इसे लेकर कई प्रश्न आये लेकिन तमाम प्रश्नों का उत्तर देते हुए बिहार के तत्कालीन मुख्य मन्त्री बिहार केशरी डॉ० श्रीकृष्ण सिंह ने अपनी ओर से स्पष्ट किया कि मैंने इसकी पूरी पूरी छानबीन करा ली है और निष्पक्ष जाँच के विवरण से यह आधार सामने आया है कि आर्यवीर दल कोई सैनिक, अर्द्ध-सैनिक या साम्प्रदायिक संस्था नहीं, वरन् यह एक शुद्ध सांस्कृतिक एवं सामाजिक संस्था के रूप में सम्मानित है। नियमानुसार बिहार सरकार ने आर्यवीर दल पर लगा प्रतिबन्ध वापस ले लिया। यह निश्चित है कि आर्यवीर दल ने मात्र जनता की सेवा की है। इस दल के उद्देश्यों में कहीं भी साम्प्रदायिकता की भावना का प्रभाव नहीं है। इस भावना से आर्यवीरों ने कभी कोई कार्य नहीं किया। आज भी आर्यवीर दल अपने इसी लक्ष्य और सिद्धांत को आधार बनाकर चल रहा है।

(१०. भारतीय स्वाधीनता के बाद देश के देशी राज्यों ने स्वेच्छा से भारतीय गणराज्य के साथ विलय को स्वीकार किया लेकिन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निजाम हैदराबाद की आनाकानी के बाद भारत सरकार को सैनिक कार्यवाही करनी पड़ी। इसके पूर्व हैदराबाद के रजाकारों के खौफनाक इरादे सामने आ गए। इसके पहले कि भारतीय पुलिस हैदराबाद में अपनी ओर से कोई कारवाई करती, आर्य-वीर दल के आर्यवीर हैदराबाद पहुँच गए और इन आर्यवीरों ने रजाकारों के साथ संघर्ष किया। इस हथियार बन्द संघर्ष के फलस्वरूप लगभग ५०-६० गाँव पूर्णतया स्वाधीन घोषित हो गए। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि यह साहसिक कारवाई भारतीय सेना के हैदराबाद प्रवेश के पहले हुई। भारत सरकार के खुफिया विभाग ने आर्यवीरों को अपने विश्वास में लिया और उन्हें अपनी संचि-काओं में नहीं, व्यवहार में भी विशिष्ट स्थान देकर सम्मानित किया। यह भी सत्य है कि हमारे आर्यवीरों ने सरकार के गुप्तचर विभाग में रहकर सरकार को अनेक महत्वपूर्ण और गुप्त से गुप्त सूचनाएँ दीं, जिनके आधार पर भारत सरकार को हैदराबाद के भारतीय गणराज्य में विलय के लिए स्पष्ट आधार मिला। इस उल्लेखनीय कार्य में आर्यवीरों ने अपनी बुद्धिमत्ता का परिचय दिया। इस प्रकार हैदराबाद के खौफनाक रजाकारों की शक्ति क्षीण की जा सकी। रजाकारों के उद्देश्य को विफल करने के लिए आर्यवीरों ने साहस और संयम के साथ निजाम हैदराबाद के बैंक से २२ लाख रुपये हस्तगत कर तत्कालीन गृह मन्त्री सर-दार वल्लभ भाई पटेल के आदेशानुसार हैदराबाद राज्य कांग्रेस के सचिव को समर्पित कर दिया। यह घटना हमारे आर्यवीरों के उज्ज्वल चरित्र को हमारे सामने प्रस्तुत करती है। यह घटना अपने आप में निष्ठा और ईमानदारी का परम पावन प्रमाण मानी जा सकती है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आसफजाही कमान भेदी गई

(११) हैदराबाद (दक्षिण) के उपदेशक सम्मेलन की अध्यक्षता आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान् श्रद्धेय अयोध्या प्रसाद वैदिक मिश्नरी ने की। यह सम्मेलन स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व आयोजित किया गया। सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष थे पं० नरेन्द्र और संयोजक थे महान वक्ता पं० प्रकाशवीर शास्त्री। श्रद्धेय ओमप्रकाश त्यागी ओ३म् ध्वज लिए घोड़े पर सवार आर्य समाज की ओर से संयोजित जुलूस के आगे आ गये। सार्वदेशिक आर्यवीर दल के उप प्रधान संचालक श्री पं० बालदिवाकर हंस के साथ श्री ओम्प्रकाश त्यागी ने गुप्त मन्त्रणा की कि पिछले चालीस वर्षों से आम जनता के लिए बन्द आसफजाही कमान (द्वार) आज इस ऐतिहासिक जुलूस द्वारा भेदन कर दिया जाय। सहसा एक लहर-सी दौड़ गयी।

वैदिक धर्म की जय, जो बोले सो अभय, आर्यवीरों जागो का जयघोष गुंजायमान हुआ। पं० बालदिवाकर हंस ने हरी झण्डी दी और अश्वारोही, कमान के मध्य से निकलने को आगे बढ़े। प्रहरियों ने रोकना चाहा, आर्यवीरों ने उन्हें हंसते-हँसते पकड लिया। सारा जुलूस गगनभेदो नाद करता कमान के बीच से निकल गया। अगले दिन दक्षिण भारत के प्रायः समाचार-पत्रों ने मुख्य शीर्षक देकर इस समाचार को प्रकाशित किया। आर्यवीरों ने आसफजाही के चालीस वर्ष से बन्द द्वार को खोलकर हैदराबाद भूमि पर आयोजित उपदेशक सम्मेलन की मर्यादा बढ़ा दी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
और इस ऐतिहासिक सफलता से आर्यवीरों का मस्तक ऊपर उठा।

(१२) आर्यवीर दल का अजेय संकल्प, राष्ट्र और समाज के प्रति निष्ठा तथा सेवा-भावना ही उसका मूल-धन है। ईश्वर ने बार-बार आर्यवीरों के साहस और संकल्प की परीक्षा भी ली है। यह सन्तोष की बात है कि हमारा आर्यवीर दल इन परीक्षाओं में अपना स्थान सदा ही शीर्ष पर रखा है और उसका सम्मान जनक परिणाम सदा ही सामने आया है। असम की भूमि पर जब ब्रह्मपुत्र नदी की विनाशलीला शुरू हुई तो सारे देश में हाहाकार मच गया लेकिन बाढ़ विभीषिका से असम की जनता की रक्षा के लिए सबसे पहले पहुँचने वाले युवक आर्यवीर दल के आर्यवीर ही थे। असम के बाढ़ ग्रस्त क्षेत्रों में कई स्थानों पर सरकारी सहायता से पहले आर्यवीर दल के युवक ही पहुँचे। स्मरणीय है कि भूकम्प से प्रकम्पित ब्रह्मपुत्र की धारा अपना विनाशकारी दृश्य दिखा रही थी। सरकार की ओर से ब्रह्मपुत्र के बाढ़ ग्रस्त क्षेत्रों में विमानों द्वारा सहायता सामग्री पहुँचायी जा रही थी। इस स्थल पर यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि आर्यवीर दल के प्रधान सेनापति श्री ओम्प्रकाश त्यागी आर्यवीरों के दल के साथ नौकाओं की सहायता से बाढ़-पीड़ितों के लिए सहायता सामग्री लेकर गए। अपने जीवन को खतरें की धार पर रखकर सेवा कार्य सम्पन्न किया। ब्रह्मपुत्र की धारा इतनी तेज थी कि घाट से नाव खुली और एक मल्लाह झटका खाकर नाव से गिर गया, लेकिन वह नाव उसे बचाने के लिए लौट न सकी। आर्यवीरों ने तेज धारा के बीच कूदकर उस मल्लाह के प्राणों की रक्षा की। सामाजिक सांस्कृतिक संकट के समय ही नहीं वरन् राष्ट्रीय संकट की घड़ियों में भी आर्यवीर दल ने अपने सहयोग की भूमिका

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
निभायी। राष्ट्रीय संकट हो या सांस्कृतिक, जब कोई स्वयंसेवी संगठन आगे नहीं आया, आर्यवीर दल के साहसी आर्यवीर कठिन संकल्प लिए आगे बढ़े। इस उद्घोषणा के साथ कि 'अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्तुः।' वे सफल हुए, अपने कठिन कर्त्तव्य के बल पर, वे प्रत्येक कठिन परीक्षाओं में उत्तीर्ण हुए अपने संकल्पों के बल पर, वे जागते रहे महर्षि दयानन्द के आदर्शों के बल पर। आर्य-वीर दल का यह दृढ़ संकल्प है कि जब भी मानवता को, सेवा को आवश्यकता होगी, हमारे आर्यवीर दल के आर्यवीर अपने रक्त की अंतिम बूंद तक देश सेवा की बलिवेदी पर समर्पित करने को कटिबद्ध रहेंगे।

केकड़ी की बाढ़ में

राजस्थान का जिला अजमेर और अजमेर का एक कस्बा केकड़ी, जो राजस्थान की प्राकृतिक विपदाओं के इतिहास में केकड़ी बाढ़ के कारण आज भी स्मरण किया जाता है। इस विख्यात विनाशकारी बाढ़ का कारण बना उदयपुर क्षेत्र के एक विशाल जलाशय का तटबन्ध टूट जाना। अगाध जलराशि, विप्लव जैसा ताण्डव नृत्य करती हाहाकार के साथ आगे बढ़ी। एक दो नहीं, ९ जलाशयों के तटबन्धों को अपनी तेज धारा के भीतर समेट लिया और केकड़ी कस्बे के भीतर पानी का स्तर १३ फीट हो गया। हजारों नर-नारी मृत्यु के ग्रास हुए, कुछ लोग किसी तरह बच सके। आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान के संयुक्त मंत्री और आर्य वीर दल के अधिष्ठाता के नाते पं० बाल दिवाकर हंस केकड़ी के बाढ़-पीड़ित जनों की रक्षा के लिए आगे आये। केकड़ी कस्बे में उस दिन केवल शव ही शव दिखायी दे रहे थे। पं० बाल दिवाकर हंस अपने साथियों के साथ नाक पर कपूर की डली लपेटे दुर्घटना-स्थल पर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़ी लाश की ढेर में किसी जीवित प्राणी की खोज करने लगे। सहसा एक पेड़ के ऊपर से किसी की कराह सुनाई पड़ी। वह पेड़ झुक गया था और धराशायी होने की स्थिति में था। श्री हंस प्राण-रक्षक रस्से और गुब्बारे लिए उस पेड़ पर चढ़ गए। अपने साथियों को निर्देश देकर नीचे छोड़ दिया। किसी तरह पेड़ पर लटके अधमरे वृद्ध व्यक्ति को नीचे उतार लिया। बोतल के पानी से उसके मुख को धोया, दो चार चम्मच पानी अमृतधारा मिलाकर पिलाया। वृद्ध की आँखें खुलीं, वृद्ध बोला-मेरा बच्चा, लड़की, पत्नी कहाँ है? मैं ही पापी बचा हूँ अपने परिवार में, मुझे तुमने क्यों बचा लिया?

उस वृद्ध को बारी-बारी से पीठ पर लादकर दो मील से अधिक की दूरी पार कर गाँव लाया गया और उसे १५०) नगद तथा कपड़े के साथ अनाज आदि देकर उसे वहीं बसा दिया गया। ऐसी अनेक रोमांचक घटनायें इस भीषण जल-प्लावन के साथ आर्य वीर दल से जुड़ी हैं परन्तु उल्लेखनीय है कि उक्त वृद्ध ने दाम लेने से इन्कार कर दिया तो प्रत्युत्पन्नमति श्री बाल दिवाकर हंस ने उस वृद्ध का एक सादे कागज पर अंगूठे का निशान लगवा लिया और यह कहकर उसे आश्वस्त किया कि बाबा, यह सामान आपका उधार दिया जा रहा है। समय आने पर हम वापस ले लेंगे, तब उस वृद्ध ने सामान स्वीकार किया।

मौरवी जलप्लावन और सार्वदेशिक आर्य वीर दल

मौरवी (गुजरात) की इस विनाशकारी बाढ़ के काफी दिन गुजर गए। एक तटबन्ध के ध्वस्त होने से विकराल रूप धारण किए अपार जलराशि समुद्र की ओर बढ़ी। मौरवी का इतिहास प्रसिद्ध घोड़ोंवाला पुल बह गया, जो वहाँ की राजशाही की अमर निशानी था। शिरोमणि सार्वदेशिक सभा में प्रधान मान्य ला० रामगोपालजी शालवाले ने श्री पं० बालदिवाकर हंस प्रधान संयोजक को बीस हजार रुपये देकर उक्त

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बाढ़ पीड़ित क्षेत्र की ओर शीघ्र जाने का निर्देश दिया। श्री हंस जी आर्य वीर दल के जवानों के साथ मौरवी (गुजरात) को प्रस्थान कर गए और उनके सहयोगी हुए श्री रणजीत सिंह राणा, दिनकर शर्मा, होतीराम एडवोकेट (मुजफ्फरनगर) आदि।

पंडित बाल दिवाकर हंस ने अपने कर्म कौशल से ध्वस्त मौरवी आर्य-समाज में सहायता केन्द्र खोला। अहमदाबाद और बम्बई के श्रेष्ठजनों से लगभग साढ़े तीन लाख से अधिक की सामग्री प्राप्त कर बाढ़ पीड़ितों को राहत दिलायी गयी। स्मरणीय है कि बड़ौदा, पोरबन्दर राजकोट विद्यालय की ढाई सौ छात्राओं और इतने ही आर्य वीरों ने पीड़ितों के मकान में जमी ५ से ६ फीट कीचड़ को निकाला और लोगों को जीवनोपयोगी सामग्री भेंट की। सार्वदेशिक आर्य वीर दल की सेवाओं की ऐसी अनेक घटनाएँ अविस्मरणीय हैं।

आर्य वीर दल : रूपरेखा

सांस्कृतिक हित के साथ ही समाज के प्रति उदार परोपकार-भावना इस समाज का परम पुनीत लक्ष्य और उद्देश्य है। आर्य समाज अपने इन्हीं उद्देश्यों और लक्ष्यों को लेकर अपने राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप मानवता की सेवा में कार्यरत ही नहीं, संघर्षरत भी हैं। यह कार्यक्रम युग की परिस्थितियों को सामने रखते हुए क्रियात्मक मान-चित्र और सक्रिय रूप देना ही आर्य वीर दल का लक्ष्य है। यही साधारण रूप-रेखा आर्य समाज के साथ ही आर्य वीर दल की है।

आर्य वीर दल : संक्षिप्त परिचय

विश्व के रंगमंच पर हरेक दिशा से बहकर आती हुई सम्प्रदायवाद की विनाशकारी धारा पर एक सशक्त बाँध के समान सशक्त स्वरूप लिए जो स्वयं सेवी संगठन विराजमान है, वह आर्य वीर दल है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आर्यावर्त्त के निवासी हम सभी आर्य हैं। आर्य ईश्वर-पुत्र होता है। ईश्वरीय मानवधर्म के प्रति निष्ठा और आदर भाव रखने वाला प्रत्येक व्यक्ति आर्य कहलाने का अधिकारी है। यह धर्म वेद में उपदिष्ट है। इसी आधार पर वह वैदिक कहा जाता है। वेद से निःसृत धर्म ही वैदिक धर्म कहा जाता है। धर्म और सम्प्रदाय में बहुत अन्तर है। सम्प्रदाय वह है, जो व्यक्ति, जाति, नदी, पर्वत की सीमा, भाषा तथा विशेष ऐतिहासिक सीमाओं के भीतर रहकर किसी विशेष जाति वर्ग तथा क्षेत्र के स्वार्थ भरे उद्देश्य की ओर अपनी दृष्टि रखता है। सम्प्रदाय अपनी स्वार्थ परक नीतियों के लिए अनिष्टकारी भावना का समर्थक हो सकता है। धर्म इन सारी स्थितियों से अलग अपना समग्र रूप रखता है। धम स्पष्ट रूप से सत्य और कर्तव्य का पर्यायवाची है। धर्म का सम्बन्ध किसी विशेष वर्ग, जाति, व्यक्तित्व, देश या किसी क्षेत्र विशेष के साथ नहीं होता। धर्म सामान्य मानव तथा मानव समाज के उत्तरोत्तर अभ्युत्थान और निःश्रेयस के साथ होता है। धर्म के प्रति गहरे और दृढ़ विश्वास के साथ अनुशासित रहना आर्य वीर दल और आर्य वीरों का प्रथम कर्त्तव्य माना जाता है। आर्य वीर दल की मान्यता है कि अनुशासन से जीवन का विकास होता है।

धर्म और सम्प्रदाय

महर्षि ने कहा था—"हमारे देश की आत्मा धर्म में सन्निहित है।" धार्मिक जागृति का अर्थ है—अन्तरात्मा के साथ ही सम्पूर्ण विश्व में ईश्वर के दर्शन करना। धर्मनिष्ठ जीवन, सत्यवादिता, निर्भयता, लोक-कल्याणकारी कार्यों के प्रति उत्साह उत्पन्न करना ही श्रेष्ठ आर्य धर्म है। यह निश्चित और निरूपित सत्य ही आर्य वीर दल की आचार संहिता भी है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारे संसार में प्रायः पाँच प्रकार के सम्प्रदाय ही अस्तित्व में हैं (क) धार्मिक या दार्शनिक सम्प्रदाय, इनमें मुस्लिम, इसाई, पारसी आदि आते हैं। (ख) आर्थिक सम्प्रदाय, जैसे श्रमिक, पूँजीपति, किसान और जमीन्दार-वर्ग (ग) सामाजिक सम्प्रदाय-सवर्ण और नीच अस्पृश्य और स्पृश्य आदि। (घ) राजनीतिक सम्प्रदाय-विश्व के राजनीतिक संगठन आदि। (ङ) भौगोलिक सम्प्रदाय, राष्ट्रीयता के सुनहरे मुखौटे से सत्य का मुखमण्डल ढके हुए।

धर्म के आध्यात्मिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक दिशाओं में आर्य संस्कारों के आधार पर संसार में क्रांति लाना ही आर्य वीर दल का लक्ष्य और उद्देश्य है। विश्व के क्रांतिकारी परिवर्त्तन या युग प्रवर्त्तक आन्दोलनों को दो दिशायें होती हैं—एक दिशा होती है कि अहिंसात्मक प्रचार या हिंसक क्रांति के माध्यम से समाज का संशोधन किया जाय और दूसरी दिशा यह है कि आज की पीढ़ी की समाप्ति की प्रतीक्षा की जाय और आनेवाली पीढ़ी का नये सिरे से निर्माण किया जाय, ऐसी पीढ़ी का जिसके संशोधन की ही कभी आवश्यकता न आए। वह पीढ़ी स्वयं सात्विक शुद्ध और संस्कार-सम्पन्न हो। आर्य समाज ने अभी तक संशोधन के पथ को ही अंगीकार किया नये निर्माण की ओर उसकी दृष्टि नहीं गयी। यही कारण है कि आर्य समाज की लम्बी साधना के बाद भी हम अपने उद्देश्य को प्राप्ति नहीं कर सके। 'कृण्वन्तो विश्व-मार्यम्, का विजय घोष गुंजित मात्र हुआ और आर्य समाज आन्दोलन से विरत होकर स्वयं एक संस्था और सम्प्रदाय का स्वरूप लेकर जीवित रहा।

आर्य वीर दल इस नव निर्माण के यज्ञ को अपने हाथ में लेना चाहता है, संशोधन का कार्य समानान्तर योजना और कार्य के रूप में साथ रहेगा। इस निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आर्य वीर दल का

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
यह नव निर्माण कार्य शारीरिक, मानसिक तथा सामाजिक तीनों क्षेत्रों से सम्बद्ध होगा।

चरित्रनिर्माण

आज के विश्व की आर्थिक व्यवस्था एक शोषणयुक्त दूषित अर्थ-व्यवस्था के रूप में जी रही है। शोषण की इस व्यवस्था ने सारे संसार को इतना दुर्बल और जर्जर कर दिया है कि सामाजिक विकास की आशा क्षीण हो गयी है। आज सुविधाओं और साधनों का दावा तो किया जाता है लेकिन निर्माण और उत्थान या विकास की आयु में हमारे देश के युवकों को स्वस्थ शरीर निर्माण के लिए उपयुक्त पोषक आहार भी सुलभ नहीं हो पाता। समय और समाज का दूषित वातावरण उसके संयमित जीवन को भी हिलाकर रख देता है, वह जीवन को स्थिरता भी नहीं दे सकता।

आप कल्पना कीजिए कि जब एक उच्च शिक्षा प्राप्त युवक अपने मासिक वेतन की छोटी सी राशि कठिन श्रम के वाद प्राप्त करता है और उस राशि से जीवन के लिए पौष्टिक आहार क्या सन्तोष जनक रूप से अपना पेट भी नहीं पाल पाता, तो उसकी शारीरिक शक्ति अपने आप पराजित हो जाती है। संयमहीन जीवन उस घोर पराजय में सहयोगी होता है। धीरे-धीरे वह महारोगों का शिकार होकर असमय ही काल कवलित हो जाता है।

आज सारा संसार कई प्रकार के असाध्य रोगों से ग्रसित होता जा रहा है। हमारा भारत इससे वंचित नहीं है। हमारे देश में ऐसे असाध्य रोगों का प्रसार इतनी तेजी के साथ होता जा रहा है कि हमारे चिकित्सक हैरान और परेशान होने लगे हैं। इन असाध्य रोगों पर नियन्त्रण भी संभव नहीं रह गया है। समय और आज़ की परिस्थितियों की पुकार है कि इसे समूल नष्ट करने के लिए समाज की आर्थिक स्थिति का

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सुधार किया जाय, साथ ही हमारे बीच जन्म ले रही आर्थिक विसंगतियों को नियन्त्रित किया जाय। इसके साथ ही यह भी आवश्यक है कि आज के युवकों में दैनिक व्यायाम तथा स्वस्थ वायु-सेवन की अभिरुचि जाग्रत की जाय। इस क्रिया से शरीर के भीतर पोषक तत्वों के अभाव को किसी सीमा तक दूर किया जा सकता है।

चरित्र निर्माण की योजनायें

हमारा यह दुर्भाग्य है कि हमारा देश, आर्य समाज के बौद्धिक निर्माण यज्ञ के कार्य क्रम को भी अत्यन्त गौण और हास्यास्पद मानने लगा है। यह स्थिति अत्यन्त ही चिंताजनक है। इन विषम परिस्थितियों में इसका सही विकल्प आर्य वीर दल ही प्रस्तुत कर सकता है। आर्य वीर दल ही इस भ्रामक स्थिति का निवारण कर सकता है। इस सच्चाई को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। निश्चित लक्ष्य और उद्देश्य को लेकर आर्य वीर दल इस दिशा में सक्रिय और सफल प्रयास कर रहा है। इस चरित्र निर्माण योजना के अधीन प्रत्येक ग्राम में स्वास्थ्य निर्माण के समस्त साधन सहित साधनास्थल की स्थापना का लक्ष्य निर्धारित है। आर्य वीर दल इस सोद्देश्य लक्ष्य की ओर बढ़ रहा है। इस कार्य क्रम के अन्तर्गत देश के प्रदेशों और जिलों में स्वास्थ्य-सम्मेलनों के आयोजन की व्यवस्था की जा रही हैं। इन साधना स्थलों के माध्यम से युवकों को स्वास्थ्य निर्माण के साधन से सम्बन्धित विचार देने के साथ ही शारीरिक और स्वास्थ्य प्रतियोगितायें भी आयोजित की जायेंगी। इन सम्मेलनों में समुपस्थित युवकों के बीच चरित्र निर्माण के साथ ही स्वास्थ्य-निर्माण की प्रवृत्ति को जगाने वाले स्वस्थ साहित्य का वितरण भी किया जायेगा।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूल का अभिसिंचन

हमारे देश का युबक ही आने वाले समाज का सही भविष्य है। आज का युवक इस देश के विशाल विपिन की हरी पौध है। आज की आवश्यकता यह नहीं है कि पौधे की पत्तियों को पानी दिया जाय वरन् आज की अनिवार्य आवश्यकता है कि उसके मूल का अभिसिंचन किया जाय, तभी हम अपने राष्ट्र का कल्याण कर सकते हैं।

हमारा यह अटूट और दृढ़ विश्वास है कि बाल विवाह की प्रथा, चरित्र हीनता तथा असंयमित गार्हस्थ्य जीवन के साथ वनस्पति घी आदि स्वास्थ्य विनाशक तत्वों का सेवन हमारे युवकों को दुर्बलता की ओर ले जाता है। इनके साथ ही अश्लील साहित्य और गन्दे चलचित्र आदि चरित्र विनाशक साधन हमारे युवकों को दिशाहीन करते हैं। आवश्यकता यह है कि इनके विरुद्ध सक्रिय आन्दोलन को तेज किया जाय। तभी हम युवकों के संस्कार और स्वास्थ्य की रक्षा कर उन्हें नव स्वास्थ्य निर्माण की ओर अनुप्रेरित कर सकेंगे। यदि यह प्रयास सफल होता है तो हमारे साधना स्थल आज के स्वास्थ्य सनिटोरियमों की विफलता को सिद्ध कर सकेंगे। आज का स्वस्थ-युवक ही स्वस्थ और सशक्त राष्ट्र के निर्माण में सही भागीदार हो सकता है। आर्य वीर दल इस दिशा की ओर सक्रिय कदम बढ़ा रहा है।

मानसिक चेतना का विकास

हमारे समाज के युवकों के बीच कई महारोगों के जीवित कीटाणु महामारी के समान तेजी के साथ फैलते जा रहे हैं, इससे सारा युवक समाज प्रभावित होने लगा है। ये कीटाणु हैं—सहशिक्षा की दूषित प्रणाली, अश्लील साहित्य, गन्दे और भ्रष्ट चलचित्र। आश्चर्य की बात

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
यह है कि जहाँ इन पर प्रतिबन्ध लगना चाहिए, वहाँ इन कीटाणुओं को फैलाने में प्रशासन ही अपना योगदान कर रहा है। ये विषभरे पात्र युवक समाज के सामने आदर के साथ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

बात यहीं तक सीमित नहीं है, शिक्षण संस्थाओं में पश्चिम की मानसिक दासता से प्रभावित पाठ ही पढ़ाया जाता है। इस नयी शिक्षा प्रणाली ने हमारी युवा पीढ़ी को प्राचीन आध्यात्मवादी प्रवृत्ति और संस्कारों से विमुख करने में भरपूर सहयोग किया है। घार आर्थिक संकट के इस युग में आज की भौतिकवादी संस्कृति ने मानव-समाज की भौतिकवादो आवश्यकताओं की सीमा को बढ़ाकर भ्रष्टाचार, चोर-बाज़ारी और घूसखोरी के लिए विवश कर दिया है। यही कारण है कि हमारा सामाजिक पतन होता जा रहा है।

यही स्थिति नारी जाति को भी अधः पतन की ओर क़दम बढ़ाने के लिए विवश कर रही है नारी, जो वात्सल्यमयी ममता की मूर्त्ति के रूप में पूजित होती रही है, उसे अपने उत्तरदायित्वपूर्ण ऊँचे स्थान से हटाकर 'पुरुष' बनने का सपना देखने को विवश किया जा रहा है। कहने का अर्थ यह कि समाज-निर्माण के समस्त साधन घोर विनाश की दिशा की ओर जा रहे हैं, कहीं कोई बाधा या अवरोध नहीं है। दूसरी ओर कुछ पथभ्रष्ट युवक धर्म और संस्कृति के नाम पर सम्प्रदायवादी संगठन के साथ होकर जय दुर्गा, जय महाकाली, जय शिव, हरहर महादेव का जयघोष करते हुए निरन्तर जड़ पूजा की ओर आकर्षित होने लगे हैं। बात यहीं समाप्त नहीं होती, अब तो कुछ युवक अमेरिकी पूँजीवादी विलासी जीवन की ओर आकृष्ट होने लगे हैं, तो कुछ नयी पीढ़ी के लोग नास्तिक साम्यवाद की ओर नतमस्तक होने लगे हैं।

यह विषम परिस्थिति हमारे समाज को खोखला करती जा रही

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
है। इन स्थितियों और परिस्थितियों का सामना करने के लिए भी आर्यवीर दल अग्रसर होने लगा है। आर्यवीर दल ने यह निश्चय किया है कि चरित्र विरोधी साधनों, अश्लील तथा भौतिकवादी साहित्य का खुला और स्पष्ट विरोध किया जायेगा। इसके लिए कठिन असहयोग का कार्यक्रम भी संचालित किया जायेगा। आवश्यकता हुई तो सत्याग्रह और यदि स्थितियों ने विवश किया तो आन्दोलन भी चलाया जायेगा।

आर्यवीर दल का यह भी निश्चय है कि अपने देश के युवकों में वैदिक संस्कृति की पावनतम विचारधारा को जगाने के लिए साधना मन्दिरों में स्वस्थ साहित्य संग्रह की योजना को कार्यरूप दिया जायेगा और यदि आवश्यकता का अनुभव किया गया तो सत् साहित्य से समृद्ध चलते-फिरते पुस्तकालय का संचालन भी आरम्भ किया जायेगा।

वैदिक संस्कृति और साहित्य के सहयोग तथा आधार पर समय के अनुसार ही नहीं, युग के अनुसार वर्त्तमान समस्याओं का समाधान आज की अनिवार्य आवश्यकता बनती जा रही है। आज की आर्थिक और राजनीतिक रूपरेखा ही नहीं, विज्ञान समाजशास्त्र में भी आध्यात्मवादी दर्शन का अनुभव किया जा रहा है। आज की आवश्यकता यह भी है कि जीवन के लिए आवश्यक विषयों पर उच्च कोटि के विद्वानों से साहित्य का सृजन कराया जाय और उसे प्रकाशित कराकर युवकों को दिया जाय। विद्यालयों और महाविद्यालयों में सांस्कृतिक सदाचार मण्डल की स्थापना भी करायी जाय और इनके तत्त्वावधान में वाद-विवाद के आयोजन कराये जाँय। सामान्य जनता के बीच वैदिक साहित्य, स्वस्थ समाचार-पत्र, साहित्य, भाषण और काव्य-पाठ की व्यवस्था कराने की योजना भी हमारे आर्यवीर दल की है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामाजिक नवनिर्माण की दिशाएँ

नये समाज और उसके नवनिर्माण के लिए आर्यवीर दल की ओर से कुछ मान्यताएँ निरूपित हैं। हमारी इन मान्यताओं के अनुसार कम्यूनिज्म प्रगतिवादी अनार्य है और आर्यवीर दल उसके सर्वथा विपरीत प्रगतिवादी आर्य है। हमारा सामाजिक एवम् राजनैतिक कार्यक्रम पूर्णतया क्रांतिकारी और प्रगतिशील है। हमारी यह स्पष्ट अवधारणा है कि संसार के सारे सम्प्रदाय भेद ही नहीं वरन् सम्पूर्ण वर्ग संघर्ष को समाप्त कर समस्त संसार में मानव के साथ मानवता के नाते मानव का सीधा सम्बन्ध स्थापित करना तथा उसे जीवित रखना हमारे उद्देश्य का आदर्श है। आर्यवीर दल की भाषा में मानव का शब्द का पर्यायवाची 'आर्य' है।

नये सामाजिक निर्माण के लिए आर्यवीर दल की ओर से कुछ अनिवार्य सूत्र हैं और इनका आधार वैदिक व्यवस्था है। सामाजिक निर्माण के लिए आधारभूत नियम निम्नांकित हैं—

(१) जाति-वर्ग की सामाजिक तथा साम्प्रदायिक भावना का समूल अन्त कर वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था की क्रियात्मक स्थापना। अपने नाम के आगे कोई भी आर्यवीर जातिवाचक उपाधि नहीं लगा सकेगा। आर्यवीर दल के बौद्धिक तथा चारीत्रिक शिक्षण के बाद उनकी दीक्षा के समय दिया गया वर्ण ही उनका अपना वर्ण होगा।

(२) युग को पगध्वनि के अनुसार युग की अनिवार्य आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर वैदिक राजनीति के परिष्कृत रूप का सामान्य जनता के बीच प्रचार तथा यथाशक्ति अन्य उचित उपायों के आधार पर राजनैतिक क्षेत्र में प्रविष्ट होगा।

(३) आर्यवीर दल की राजनीति का युगोपयोगी आर्थिक आधारपूर्ण वर्णाश्रम व्यवस्था पर आधारित होते हुए भी आधुनिक युग की

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनिवार्यता के अनुरूप होगा कि हमारी व्यवस्था कम्यूनिज्म की आर्थिक रूपरेखा के विरुद्ध सफल सिद्ध हो सके।

(४) राष्ट्रीयता के नाम पर विश्व के माथे पर कई महायुद्ध अनेक गृहयुद्ध तथा विश्वव्यापी अशांति के मूल प्रेरक हैं—संसार के भौगोलिक सम्प्रदाय। आर्य वीर दल की मान्यता हैं कि मानव निर्मित सीमा-रेखा को समाप्त कर एक विशाल तथा समग्र मानवीय विश्व राष्ट्र की योजना को विश्व के राजनीति शास्त्रकारों तथा विद्वानों के सामने उपस्थापित किया जाय और इस योजना को पूर्ण सफलता के लिए प्राण-प्रण से प्रयास किया जाय।

(५) उपरोक्त आधार पर "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" आर्य (मानवीय, धार्मिक, श्रेष्ठ) चक्रवर्ती, सांस्कृतिक, राजनैतिक तथा सामाजिक साम्राज्य का निर्माण हमारा परम उद्देश्य है। हमें इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए सतत प्रयत्नशील और संघर्षशील होना होगा।

(६) व्यक्ति से समाज तथा समाज से व्यक्ति के निर्माण के सहयोगात्मक सिद्धान्त के प्रति हमारा दृढ़ विश्वास है। आर्य वीर दल इस विषय के प्रतिपादन के लिए विशेष साहित्य प्रस्तुत करेगा।

उद्बोधन : आर्यवीरों के प्रति

युवा पीढ़ी राष्ट्र की सबसे शक्तिशाली शक्ति होती है। इस शक्ति का क्षय राष्ट्रीय क्षति है। शक्ति आप भी हैं, आप शक्ति के प्रतीक हैं। हमारी एक सजीव संस्कृति है पर वह क्या है, आप इसका वर्णन भी नहीं कर पाते इसलिए कि आप अपने संस्कारों से परिचित नहीं हैं। आप स्वाधीन हैं, बिना इसके ज्ञान के, कि स्वतन्त्रता क्या है। आप

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
धार्मिक विचार धारा के साथ हैं, बिना यह जाने कि जीवन क्या है। आपको इसका सही बोध होना चाहिए।

आइए, हम सभी मिलकर अपने महान कर्त्तव्यों के पथ पर कदम मिलाकर चलना प्रारम्भ करें। आप यह तो जानते ही हैं कि छोटे-छोटे सोते मिलकर बडी नदो का रूप लेते हैं। सभी दिशाओं से आता मन्द-मन्द समीर मिलकर तीव्रगामी पवन का रूप लेता है। पंछी झुंड बाँध कर उड़ते हैं और इससे वे निर्भीकता का अनुभव करते हैं।

आप देख रहे हैं विश्व की परिस्थितियाँ बदल रही हैं। इन स्थितियों में सुधार की नितान्त आवश्यकता है। ऐसे सुधार और परिवर्त्तन की जहाँ मानव. मानव का शोषण न कर सके। हमें सामाजिक शोषण के विरुद्ध आमन्त्रित क्रांति के लिए शारीरिक, मानसिक तथा सामाजिक शक्ति की आवश्यकता है। इसके लिए हमें अजेय साधना का दीपक जलाना होगा।

समय का स्वर है कि सारे प्रलोभनों से दूर हमें नास्तिकवाद के दूषित विकारों से बचकर शांति के शूल भरे क्रांति-पथ पर अग्रसर होना है। चलिए, हम एक साथ मिलकर पंक्तिबद्ध होकर, पूरी सावधानी के साथ अपने निश्चित लक्ष्य की ओर बढ़ें। आप सुनिए, दूर सुदूर दिशाओं से अभियान के गीतों को ध्वनि अनुगुञ्जित हो रही है।

चलिए, बिलकुल सीधे चलिए। एक उद्देश्य निर्धारित लक्ष्य आप की अविकल प्रतीक्षा कर रहा है। यह सम्भव है कि आज की परिस्थिति आपका जीवन मांग सकती है, इसलिए निर्भय निःसंकोच अपने को उत्सर्ग करने की भावना को लेकर आगे बढ़िए। यह भी सम्भव है कि आपको मानवता की वलिवेदी पर अपना शीश चढ़ाना पड़े

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

लेकिन शुद्ध सामाजिक अनुशासन आपको भीतर बलिदान और समर्पण की भावना चाहता है। आप अपने को सादर समर्पित करें राष्ट्र के लिए, समाज के लिए और मानवता के लिए, विगत के अनुभव-ज्ञान, वर्त्तमान की अनुभूति आपके लिए अक्षय कोष होगा। आइए, चलिए, आगे बढ़िए।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा प्रश्न सीधा और स्पष्ट है। कितने साहसी आर्य वीर हैं, जो हमारे साथ अग्नि-पथ पर चलने को तैयार हैं? राष्ट्र के भविष्य के लिए, मानवता के बहुमुखी विकास के लिए विशाल और क्रांतिकारी कार्यक्रम आपके समक्ष हैं, इसकी सम्पूर्णता के लिए यह विस्तृत अनुरोध और आदेश-पत्र है। आइए, हम एक सूत्र के भीतर बँधकर घोषित करें—'विश्व के श्रेष्ठ पुरुषो! अब एक हो जाओ, जहाँ भी हो अपने को संगठित करो, कार्यारम्भ करो, हम सभी तुम्हारे साथ हैं।

महर्षि-पाणिनि-... अनुसंधान
तिथी..........
पु०सं०..........

शक्ति तथा आचार संहिता
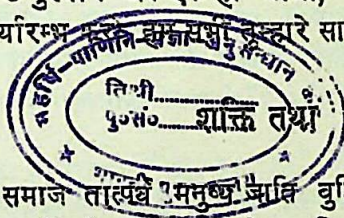
आज का मानव समाज तात्पर्य मनुष्य जाति बुद्धि और शक्ति के आधार पर खड़ी है। बुद्धि है—ब्रह्म-शक्ति और शक्ति का पर्यायवाची शब्द है क्षात्र-धर्म। ब्रह्म-शक्ति और शक्ति दोनों ही परस्पर पूरक हैं। इतिहास साक्षी है कि जिस जाति ने, यदि किसी एक को खो दिया, वह सदा-सदा के लिए विनाश के कगार पर जा पहुँची।

प्राचीन काल का इतिहास बताता है कि आर्य जाति की अनेक शाखायें अपनी बुद्धि अथवा ब्रह्म बल और क्षात्र-शक्ति के सहारे पृथ्वी पर विजयी हुईं। मध्य काल का सन्दर्भ साक्षी है कि मध्य एशिया की भूमि से उठती-उभरती नयी जातियों ने अपने संचित-सुरक्षित क्षात्र बल से उनकी शक्ति को क्षीण कर दिया था। उस समय भी क्षात्र-संस्कार हमारे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
साथ था, बुद्धि और शक्ति का अक्षय कोष भी हमारे साथ था लेकिन प्रमाद और विवेकहीन स्वाभिमान के कारण क्षात्र-बल शिथिल हो गया। इसका परिणाम यह हुआ कि हमारी पराजय हुई, ऐसी पराजय कि मस्तक उठाकर चलने की शक्ति भी शेष न रही।

कहने का अर्थ यह कि यदि कोई कुचली हुई जाति फिर से पृथ्वी पर अपने को गौरव के साथ जावित-जाग्रत देखना चाहती है और अन्य जातियों की पंक्तियों में अपने को खड़ा देखना चाहतो है तो उसे अपनी बुद्धि और ज्ञान हो नहीं क्षात्र-शक्ति का परिचय भी देना होगा। संसार का यह प्रबल सत्य है कि किसी भी मूल्यवान निधि की सुरक्षा क्षात्र-बल से ही की जा सकती है। आर्य समाज अपनी बौद्धिक शक्ति के माध्यम से प्रचार कर रहा है तो आर्य वीर दल अपने भीतर क्षात्र धर्म को शक्ति लिए उसकी सुरक्षा करता आ रहा है। इस प्रकार आर्य वीर दल, आर्य जाति के क्षात्र-धर्म का एक सजीव संगठन है। यह स्वीकार किया जाय कि आर्य वीर दल समस्त आर्य जाति की शक्ति का प्रतिनिधि भी है।

क्षात्र धर्म का अर्थ शौर्य और वीरोचित संस्कार ही नहीं वरन् दयालुता के साथ सहिष्णुता भी है। आर्य वीर दल की अपनी निर्धारित निश्चित आचार संहिता है। इस आचार संहिता की परिधि है अनुशासन, संयम और साहस। अपने निर्धारित झण्डे की छाया में चलना, सदा ही पंक्तिबद्ध होकर गतिशील रहना और आर्य धर्म पर आशंकित खतरे के प्रति सदा ही सावधान की मुद्रा में सजग-सचेत रहना आर्य वीर दल की निरूपित और स्वीकृत मान्यतायें हैं। आर्यत्व की स्वाभिमानी ध्वजा की सुरक्षा का भार भी आर्य वीर दल पर ही है।

हमारे महान विचारक प्रो० इन्द्र विद्या वाचस्पति ने अपनी ओर से आर्य वीर दल की स्पष्ट परिभाषा दी है—"आर्य वीर दल आर्यों की

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
शान्तिमयी सेना है। उसका भी झण्डा है। उस झण्डे में दो चिह्न हैं। चारो ओर सूर्य मण्डल है और मध्य में ओंकार है। सूर्य मण्डल पूर्व दिशा में आते हुए, सूर्य का उपलक्षण है। आर्य-धर्म संसार को पूर्व की देन है। आर्य देश पूर्व मूर्द्धन्य देश है और सूर्य-वंश ने संसार में आर्य संस्कृति के गौरव की स्थापना की है। इन कारणों से 'सूयमण्डल' आर्य ध्वजा का प्रधान चिह्न है। सूर्य मण्डल के मध्य में ओंकार विराजमान है।"

किसी भी संगठन का झण्डा उसके आत्म सम्मान का साहसिक प्रमाण होता है। आर्य वीर दल के प्रत्येक आर्य वीर को यह भली प्रकार से ज्ञात है कि अपने ओंकारी झण्डे को सदा ही ऊपर उठाए रखना है। आर्य वीर दल का अपना एक आदर्श है। इस आदर्श के अनुसार प्रत्येक आर्य वीर जो प्रशिक्षित है वह अन्य किसी भी ध्वज का विरोध नहीं करता। हाँ, वह अपने संकल्पो झण्डे की सुरक्षा और सम्मान के लिए सर्वस्व निछावर कर सकता है।

आर्य वीर दल का निश्चित उद्देश्य है—आर्य संस्कृति, आर्य धर्म, आर्य जाति की गौरवशाली परम्पराओं को प्राण-प्रण से सुरक्षित रखना। सामान्य जनता के बीच सेवा भावना के आधार पर अपने को सदा ही गतिशील और क्रियाशील रखना। दैवी विपत्तियों और प्राकृतिक विपदाओं की संकटमयी घड़ियों में सेवा के साथ ही रक्षा के लिए आगे-आना आर्यवीरों का पावन कर्त्तव्य माना गया है। इस आधार पर कि सेवा की सच्ची भावना मनुष्य को सदा ही ऊपर उठाती है।

क्षात्र-धर्म एक संस्कार है, जो आर्य जाति के भीतर विराजमान है। इस जीवित संस्कार की सुरक्षा के लिए आर्यवीर दल सदा ही तत्पर रहा है, यह मानकर कि संस्कार ही शक्ति है, बल है। यह मान्य

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
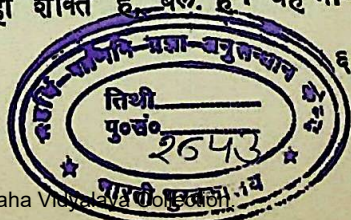
सत्य है कि संस्कार ही बौद्धिक शक्ति भी है। इसी मूल भूत आधार पर आर्य वीर दल का संगठन संचालित है। आर्य वीर दल का प्रमुख और स्पष्ट लक्ष्य है-आर्य धर्म, आर्य जाति एवम् आर्य संस्कृति की सुरक्षा करते हुए, उसकी गौरवशाली परम्पराओं को निरन्तर अक्षुण्ण रखना। इस स्थल पर यह भी स्मरणीय है कि वही छात्र-शक्ति विश्व के मानव समाज को सुखी रख सकती है, जिसके भीतर सेवा की भावना होगी, निष्काम सेवा का व्रत होगा। इस प्रकार सेवा और शक्ति का समन्वित स्वरूप है क्षात्र-धर्म। आर्य वीर दल के लिए जो सामान्य आचार संहिता श्री ओम्प्रकाश पुरुषार्थी भूतपूर्व प्रधान सेनापति सार्वदेशिक आर्य वीर दल ने निरूपित की है, उसके अनुसार—

(क) अपने से बड़े अधिकारी के साथ वार्त्तालाप के समय 'सज्जा' की स्थिति में रहना चाहिए।

(ख) साथ-साथ चलते समय सदा ही अपने अधिकारी के बाम भाग की ओर अथवा दो पग पीछे चलना चाहिए।

(ग) यदि अधिकारी बोल रहे हों या बोलने जा रहे हों तो सैनिक को मौन हो जाना चाहिए।

(घ) अपने अधिकारी के सामने सैनिक को बैठे या लेटे नहीं रहना चाहिए।

(ङ) अधिकारी को सम्बोधित करते समय नाम का उच्चारण नहीं करना चाहिए। जहाँ तक सम्भव हो, अधिकारी को पद नाम से ही पुकारना चाहिए। यदि परेड मैदान से कहीं सम्बोधन करना है, तो 'भाई जी' कहकर सम्बोधित करना चाहिए।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

(च) अधिकारी का भी कर्त्तव्य होता है कि किसी सैनिक के नाम के पीछे 'जी' शब्द अवश्य ही लगाये या उन्हें साथी के नाम से सम्बोधन करे।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[library stamp] ...भारती पुस्तकालय ... 0603

आर्य बन्धुओ !
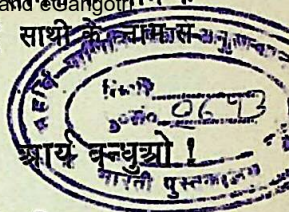
आज का संसार धीरे-धीरे कठिन समस्याओं से घिरता जा रहा है, कहिए घिर गया है। विश्व की सारी समस्याओं के समाधान और निदान का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व क्रांतिदर्शी महर्षि दयानन्द जी ने आर्य समाज को सुपुर्द किया था। महर्षि दयानन्द ने इसके लिए व्यापक रूपरेखा प्रस्तुत की था। संसार को जटिल समस्याओं के समूल विनाश के लिए, जिन कुशल हाथों की आवश्यकता है, वे हमारे तरुण आर्य-वीरों के पास हैं। नये विश्व के निर्माण-यज्ञ में आर्यवीरों का प्रमुख स्थान है।

आर्यवीर हल, राष्ट्र के विकास के लिए दृढ़ संकल्पी तरुणों का एक संगठन है, जा मात्र लाठी चलाने वाले या व्यायाम करने वाले स्वयं-सेवकों का संगठन नहीं है। यह मानवता के हित में उन अकुलाते प्राण के आर्यवीरों का दृढ़ संगठन है, जो मानवता की सेवा के लिए अपने जीवन की बाजी लगाता रहा है। यह आर्यवीर दल मात्र संगठन या संस्था नहीं, यह एक आन्दोलन है दानवता के विरुद्ध, क्रांति का ज्वाला है अनाचार तथा अनीतियों के विरुद्ध यह एक धधकती आग है।

आर्यवीर दल विराम नहीं, अभियान का समर्थक है, उसके साथ प्रलयंकारी आर्यगति है, ऐसी गति जो विनाश की ओर नहीं, निर्माण की ओर उन्मुख होती है। इस प्रकार आर्यवीर दल एक प्रक्रिया है और साधन भो। आर्यवोर दल यज्ञ है और आहुति भी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आर्यवीर दल को अपेक्षा है, आप सभी के शुभ की, आशीर्वाद की आवश्यकता है आपके बहुमूल्य अनुभवों और जीवन्त अनुभूतियों की। विश्वास है कि सारे साधन आर्यवीर दल को सुलभ होंगे।

आपसे आग्रह है कि आप अपने-अपने ग्राम-नगर में तथा आर्य समाज में आर्यवीर दल का संगठन करें और अपने बच्चों को प्रेरित करें तथा अपने जीवन के अमूल्य समय का कुछ भाग अपने बच्चों को गौरवशाली संगठन और क्रांतिदर्शी महर्षि दयानन्द की भावनाओं के नाम पर सादर समर्पित करें। आर्यवीर दल को जीवित आग्रत रखें।

ईश्वर से विनीत प्रार्थना है कि वह अपने आशीर्वाद से हमारा दिशा निर्देशन करे कि "कृण्वन्तो विश्वमार्यम् अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्तु' के साथ ही अखिल विश्व को आर्य धर्म में दीक्षित करते हुए हमारे आर्यवीर निरन्तर आगे बढ़ें।

ओ३म्

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
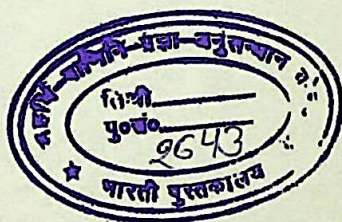
ले० रामाज्ञा वैरागी

ध्वजगान (राग मालकोष)

ध्वजेयं मुदा वर्धते व्योमवातैः
समुड्डीयमानान्तरिक्षे विशाले।
महामण्डले दीप्तदिव्यारुणाभे
सुभासैर्रवेर्भासते ओ३म् पताका ॥

प्रबुद्धार्यवर्तैकदेशे प्रशस्ता
समस्तार्यवीरैर्धृता या समन्तात्।
पुरा ज्ञान ज्योति. प्रदत्तं पृथिव्यां
सुधा वेदवाण्या नुता गीयते च।

समृद्धर्तुकामा वयञ्चार्य वीराः
समुत्थाप्यतां विश्वमेतत् प्रसुप्तम्।
इयं सार्यराष्ट्राङ्गभूता ध्वजाऽस्ते
पराशक्तिरूपा ददातु स्वशक्तिम् ॥

महामङ्गले विश्वशान्त्यैक मूर्ते
सुकीर्त्तिः सदा वर्धतां ते प्रशस्या।
समुद्घोषणा घोष्यते वीरघोषैः
विजेजीयतां नः पताकाऽप्रताया ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.